वर्ष 3, अंक 4, अप्रैल 2003 हिन्दी मासिक पत्रिका मूल्य मात्र 3/ रुपये

अंक 4, मार्च 2003 हिन्दी मासिक पत्रिका
मूल्य मात्र तीन रुपये

विश्व स्नेह समाज

क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति कारगर है?

चार कहानियाँ

तेंदुलकर बने 'मैन ऑफ द टूर्नामेंट'

जनता के साथ कदम से कदम
मिलाकर चलने वाले, जनप्रिय नेता

मो0 हलीम अंसारी,

जिलाउपाध्यक्ष कांग्रेस एवं पूर्व प्रत्याशी
विधानसभा क्षेत्र, झूंसी, इलाहाबाद के
14, अप्रैल, को उनकें 38 वें
जन्म दिवस पर लख–लख
बधाईया।

तुम जीओं हजारों साल,
साल के दिन हो पचास हजार

फोन : 2636292

पितम्बर मेमोरियल पब्लिक स्कूल

पितम्बर नगर, प्रीतम नगर, इलाहाबाद

अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम

कक्षा : नर्सरी से आठवीं तक

सरंक्षक — श्री हुकुम चन्द्र
प्रबंधक — विनोद कुमार कुशवाहा

गुप्त रोगों का सफल ईलाज

नामर्दी, स्वप्न दोष, शीघ्र–पतन, धातु पतला, छोटापन, पतलापन, टेढ़ापन, लिकोरिया, मासिक गड़बड़ी, चेहरे की छाईयां और गुप्त रोग

हकीम एम0शमीम

SS.L. UM(cAL) Reg.

होटल समीरा
काटजू रोड निकट रेलवे स्टेशन
इलाहाबाद

मिलने का समयः
प्रत्येक माह 16 से 20 तारिख
सुबहः 9 से रात्रि 8 बजे तक।

☎2401109

बर्धमान साड़ी कलेक्शन

142, जीरो रोड, घंटाघर, इलाहाबाद

वैवाहिक कलात्मक एवं आकर्षक साड़ियों का अनुपम संग्रहालय

vkidk lg;ksx gh gekjh izxfr dk ,dek= lEcy gSA

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ज्योति कान्वेन्ट स्कूल

एम.आई.जी.–175, डी/एस, प्रीतम नगर कॉलोनी,
(कोहली ढाबें के पास) इलाहाबाद

प्रवेश प्रारम्भः सन् 2003– 2004
कक्षाएंः प्लेग्रुप से कक्षा यू.के.जी. तक

अंग्रेजी /हिन्दी माध्यम

आदर्श शिक्षा निकेतन जूनियर हाई स्कूल

गीत गंगा संगीतालय

समय : सायं 4 से 6 बजे तक

विषयः गायन, वादन,नृत्य अभिनय

कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र

यहॉ पर इंटरनेट एवं प्रिटिंग, टाइपिंग और कुण्डली बनवाने की सुविधा है।

प्रधानाचार्य
एम.डी.पाठक

पताः 67 बक्शी कला, दारागंज, इलाहाबाद

प्रबंधक
डॉ. एस.के. पाठक

थोड़ी पूंजी में चोक उद्योग लगाकर पन्द्रह हजार रूपये महीने कमाएँ।

सम्पर्क करें:

संघर्ष इलेक्ट्रिकल्स

रामनगर चौराहा, नैनी, इलाहाबाद

☎ : 633763

चिल्ड्रेन्स एकाडेमी

एच.आई.जी-३, प्रीतम नगर, इलाहाबाद

प्री० नर्सरी से कक्षा आठ तक

अनुभवी अध्यापिकाओं द्वारा उचित शिक्षा का प्रबंन्ध।

प्रधानाचार्या
प्रीति बोस

स्थापित १९७२-७३ *फोन न० ६३१७८२*

सज्ज़न विद्या मन्दिर

पी.ए.सी. मेन गेट के सामने, 15, हरवारा, धूमनगंज, इलाहाबाद

नर्सरी से कक्षा ८ तक

प्रबंधक
श्री समीउद्दीन

प्रधानाचार्या
कु० शमीमा अख्तर

आनन्द कन्या विद्यालय

कल्याणी देवी, इलाहाबाद

नर्सरी, प्राइमरी एवं जूनियर हाईस्कूल

प्रवेश प्रारम्भ 2003–2004

प्रबंधक
कु0 ज्ञानवती गुप्ता

1989 में स्थापित

Hkkjrh; laLdkjksa ij vk/kkfjr ekU;rk izkIr

सरस्वती शिशु एवं विद्या मंदिर जू.हाई. स्कूल

196, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद

नोटः अनूसूचित, पिछड़ी एवं अल्पसंख्यक छात्र तथा छात्राओं को छात्रवृत्ति सुविधा।

परीक्षा प्रमुख
श्री लक्ष्मी नारायण सिंह

प्रधानाचार्य
श्रीमती मनोज सिंह

दूरदर्शन इलेक्ट्रानिक्स

53/38, भुसौली टोला, खुल्दाबाद, इलाहाबाद–211016

हमारें यहॉ सभी प्रकार की टी.वी.,डेक, ऑडियों, वीडियों और इलेक्ट्रॉनिक्स समानों की रिपयेरिंग की जाती है।

प्रो० हरिशंकर शर्मा

वर्ष : 3, अंक 4, अप्रैल 2003

हिन्दी मासिक पत्रिका
स्नेह समाज

संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
कार्यकारी संपादकः डॉ0 कुसुम लता मिश्रा
सह कार्य0 संपादकः विजयलक्ष्मी 'विभा'
सहायक संपादक
0 रजनीश कुमार तिवारी 0 सीमा मिश्रा
सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी
साहित्यसंपादक : डॉ0 भगवान प्रसाद उपाध्याय
विज्ञापन प्रबंधक : श्रीमती जया द्विवेदी

ब्युरो :
गिरिराजजी दूबे (गोरखपुर)
ज्ञानेन्द्र सिंह (मिर्जापुर)
सूर्यकांत त्रिपाठी (फतेहपुर)
मो0 तारिक ज्या (जौनपुर)
अजय कुमार विश्वकर्मा'यशस्वी(प्रतापगढ़)
इन्द्रहास पाण्डेय (गुजरात)
जागृति नगरिया (सामा0 व्यूरो, इला0)

पत्र व्यवहार कार्यालय :
एल0आई0जी 93, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद
सम्पादकीय कार्यालयः
एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद
बातचीतः 2552444 फैक्स सं0:
ई–मेलः

स्वत्वाधिकारी, सपांदक, प्रकाशक व मुद्रक **गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** द्वारा **भार्गव प्रेस,** बाई का बाग, इलाहाबाद, से मुद्रित कराकर 277/486, जेल रोड, चकरघुनाथ, नैनी, इलाहाबाद से प्रकाशित किया।
पंजीकरण संख्या : 8380/2001

आवश्यक सूचना

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सम्पादकीय

प्रिय पाठक मित्रों, नमस्कार

आपके पत्र मिलें, पत्रिका में सुधार की परम्परा जारी है। हम शनैःशनैः सफल भी हो रहे हैं। आगामी अंकों में शब्दों की कुछ त्रुटिया है, तो उन पर भी ध्यान दिया जाएगा। आपको पत्रिका के लेख पंसद आये धन्यबाद। जाति, समाज–प्रेम के स्नेह को ही उदघाटित करते के लिए 'विश्व स्नेह समाज' का सृजन हुआ है। इस दृष्टिकोण से मुखपृष्ठ आपको अच्छालगा इसके लिए हम आपसे भी वादा चाहते हें कि समाज की हिन्दू–मुस्लिम विभेद को हम स्वयं नष्ट करें तभी शांति एवं सौहार्द का संतुलन बन सकता है।

बच्चे हमारी दनियॉ को खूबसूरत बनाने वाले तथा उसमें सतरंगी कूची चलाने वाले प्रकृति के सर्वाधिक सुदंर उपहार है। उनकी किलकारियां धमाचौकड़ी हमारे वर्तमान को उल्लास से भर देती है बल्कि उन्हीं में हम अपना देश, समाज, भविष्य और संस्कृति पल्लवित होते देखते हैं। कल उन्हीं का तो है। वही देश के भावी नागरिक है विश्व स्नेह समाज ने बृद्धाआश्रम के सहायतार्थ एक चैरिटि शो का अयोजन किया जो धुस्सा, झलवा के पास किया गया था। जिसमें बच्चों के कौशल, नृत्य, संगीत, संवाद प्रतियोगिताएं विलक्षण थी। निम्न मध्य, उच्च वर्ग के बच्चों की सुन्दर कला त्रिवेणी वहॉ गोचर हुई, जो एक मृदुल स्पर्श एवं संवेग से सॅवारी गई थी। इस कार्यक्रम कों रीता बहुगुणा जोशी ने काफी सराहा भी। बच्चों के कार्यक्रम को प्रयाग में बहुत उच्च स्तर पर सम्पादित किया भारतीय विद्या परिषद जिसमें लगभग दस हजार बच्चों ने भाग लिया। 1989 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा पारित बच्चों के अधिकार सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकार करने वाले देशों में भारत भी एक है, प्रायः ग्रामीण बच्चों की जब बात की जाती है तो बाल श्रम को बहुत अधिक प्राथमिकता दे दी जाती है, जबकि उनके जीवन से जुड़े कई प्रक्षों में से एक पक्ष है, वह भी समग्र बच्चों पर नहीं वरन उनके एक हिस्सें पर लागू होता है। बालश्रम के लिए जिम्मेदार स्वयं बच्चें के माता–पिता होते हैं। वे अपने बच्चों का जिम्मेदार बना स्वयं जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकते। बालश्रम रोकने हेतु उन्हें समुचित शिक्षा देने का प्रयास करती है–**"विश्व स्नेह समाज"**

करनाल की गंवई माटी में अकुंरित 'कल्पना चावला' को कौन जानता था कि भारत की अन्तरीक्ष की यात्रा करने वाली बाद प्रथम भारतीय महिला होगी।

हमारे आपके बीच में भी कितने 'कल्पना' और 'राकेश' है। आवश्यकता है उनकी खूबियों को निखारने का, उनकी सोई प्रतिभाओं को उकेरने का ताकि भारत के बच्चे युवा होकर गुलाब से सदैव सुवासित होते रहे। आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी। होली की रंगभरी हुड़दंगा की शुभकामनाओं के साथ आपकी

कुसुमलता मिश्रा 'सरल'
कार्यकारी संपादिका

अमेरिका का अगला निशाना कौन????

इराक पर हमले के बाद अमेरिका का अगला निशाना कौन? ईरान, सीरिया, उत्तरी कोरिया, पाकिस्तान या फिर चीन। खाड़ी युद्ध के दौरान यह सवाल चर्चा का विषय बना हुआ। आम आदमी से लेकर कूटनीतिक और सैन्य विशेषज्ञ तक इस सवाल का जवाब तलाश करने में जुटे हुए है। हालांकि, इस मुद्दे पर विशेषज्ञों की अलग–अलग राय है, लेकिन लगभगन सभी का मानना है कि बगदाद पर अमेरिकी कब्जे के बाद अरब देशों और मध्य एशिया पर अमेरिका को अपना 'साम्राज्यवाद' कायम करने से रोक पाना काफी मुश्किल होगा।

कूटनीतिक और सैन्य विशेषज्ञों को अंदेशा है कि आज नहीं तो कल, अमेरिका एशिया और अरब देशों को अपना निशाना जरूर बनाएगा। उनका मानना है कि अगर अमेरिका बगदाद पर कब्जा कर उसके तेल उत्पादन को अंतरराष्ट्रीय तेल प्रक्रिया में शामिल कर लेता है, तो फिर उसका अगला निशाना अरब देश होंगे। क्योंकि अलकायदा को खत्म करना अमेरिका की दीर्घकालिक योजना है। सैन्य विशेषज्ञ के.

इतिहास के आईने में इराक

1534 ई0 में सुलेमान के नेतृत्व में तुर्की को ओटोमन साम्राज्य का बगदाद पर कब्जा।

1917 ई0 में ओटोमन साम्राज्य ने ब्रिटेन को बगदाद सौंपा।

1920 में इराक ब्रिटेन के सुपुर्द।

1921 में ब्रिटेन ने अमीर फैसल को इराक का शासक बनाया।

1932 में इराक ने पूर्ण स्वतंत्राता की घोषणा की।

1933 फैसल की मौत, उसका बेटा गाजी शासक बना।

1941 दंगों में हजारों इराकी यहूदियों की हत्या

1956 गामल आब्देल नसीर ने स्वेज नहर का राष्ट्रीकरण किया।

1957 सद्दाम हुसैन बाथ पार्टी में शामिल।

1958 राजशाही का अंत, जनरल अब्दुल करीम कासिम सत्ता पर काबिज।

1959 बाथ पार्टी के सदस्यों का सद्दाम के साथ जनरल कासिम पर जानलेवा हमला, कासिम बाल–बाल बचे।

1961 इराकी सेना का कुर्दो के खिलफ अभियान

1963 बाथ पार्टी ने कासिम का तख्ता पलटा

1966 सद्दाम हुसैन ने पार्टी की खुफिया पुलिस का गठन किया।

1967 इस्राइल के साथ छह दिन तक युद्ध

1968 बाथ पार्टी दोबारा सत्ता में आई, अहमद हसन अल बकर राष्ट्रपति बने, सद्दाम को उपराष्ट्रपति बनाया गया।

1969 कुर्दो के साथ युद्ध, पकड़े गये जासूसों को सरेआम फांसी, बड़ी संख्या में यहूदियों का कत्ल

1970 बाथ पार्टी ने कुर्दो के साथ स्वायत्त संबंधी समझौता किया

1972 इराक पेट्रोलियम कंपनी का राष्ट्रीयकरण

1973 तख्ता पलटने की कोशिश पर इराकी आतंरिक सुरक्षा के प्रमुख नादिम जार को मौत की सजा।

1974 कुर्दिश स्वायत्तता संधि विफल, भयंकर युद्ध शुरू, हजारों कुर्द इराक से भागे, बड़े स्तर पर नरसंहार

1975 ईरान ने कुर्दो को सहयोग न करने पर इराक से समझौता किया, इराक ने शत–अल अरब जलमार्ग उपलब्ध कराने पर सहमति।

1978 बगदाद सम्मेलन में कैंप डेविड संधि पर हस्ताक्षर करने पर मिश्र की आलोचना

1979 सद्दाम हुसैन इराक के राष्ट्रपति बने

1980 इराक का ईरान में प्रवेश, खूनी युद्ध प्रारम्भ।

1981 इराक का परमाणु रिएक्टर इस्राइल के हवाई हमलों में तबाह

1982 इस्राइल लेबनान में घुसा

1988 इराकी सेना का कुर्दो पर रासायनिक हमला, इराक ईरान युद्ध का अगस्त में अंत।

1990 इराक का कुवैत पर कब्जा, कुवैत को इराक का 19वां प्रांत घोषित किया

1991 खाड़ी युद्ध

आर. मेनन मानते हैं कि इराक पर कब्जे से बाद अमेरिका को तेल को लेकर किसी तरह ही कोई परेशानी होगी। उसके पास पूरा फौजी साजो सामान खाड़ी में मौजूद है। इसलिए वह अल–कायदा के बहाने सीरिया जैसे देशों के खिलाफ सैन्य कार्रवाई कर सकता है।

मेनना का कहना है कि 15–20 साल के बाद अमेरिका पाकिस्तान का रूख कर सकता है। हालांकि, पाकिस्तान अलकायदा, के सदस्यों को तलाश करने में अमेरिकी मदद कर रहा है, लेकिन कब पासा पलट जाएगा, कुछ नहीं कहा जा सकता है। वैसे खुद मुशर्रफ भी भविष्य मं पाकिस्तान पर अमेरिकी हमले की बात स्वीकार कर चुके हैं।

अमेरिका की धूर्तता देखिए–

अमेरिका ने अपने स्वार्थ की सिद्धी के लिए पाकिस्तान के खिलाफ अपने बचे–खुचे प्रतिबंध हटा लिए। यह प्रतिबंध हटाने का समय उसकी धूर्तता को प्रर्दशित करता है। फ्रांस और रूस जैसे देश इराक के प्रति अमेरिकी रवैये का जैसा तीखा विरोध कर रहे हैं, बल्कि अब ब्रिटेन में भी टोनी ब्लेयर को जैसी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है, उसमें अमेरिका को सुरक्षा परिषद में ज्यादा से ज्यादा से ज्यादा देशों की समर्थन चाहिए था। पाकिस्तान चूंकि इराक के मामले में अमेरिका का खुला समर्थन नहीं कर रहा था, लिहाजा प्रतिबंध हटा लिया गया। इससे पाकिस्तान को 25 करोड़ डॉलर की आर्थिक सहायता मिलेगी। अमेरिका हमेशा आतंकवाद के प्रति दोहरा रवैया रखता है और इस वक्त उसे अपना काम निकालना है, इसलिए उसे पाकिस्तान को रिश्वत देते हुए कोई हिचक नहीं है।

दूसरी धूर्तता का परिचारक देखिए कि अब तक वह संयुक्त राष्ट्र संघ कें अंदर सुरक्षा परिषद के माध्यम से इराक के हथियार नष्ट करवाता रहा, संयुक्त राष्ट्र संघ के हथियार निरीक्षकों द्वारा उसके सभी अड्डों की जानकारी प्राप्त कर अब संयुक्त राष्ट्र संघ को भूल कर भयंकर बमबारी कर इराकी निर्दोष जनता को अपना निशाना बना रहा है। जब खुद के सैनिक इराकी कब्जे में जाते है तो कहता है जेनेवा संमझौते का पालन करो। जब संयुक्त राष्ट्र संघ ही नहीं, कैसा समझौता।

कायदे से तो संयुक्त राष्ट्रसंघ महासचिव कोफी अन्नान को या तो इस्तीफा दे देना चाहिए अथवा सेना को लेकर इराक के पक्ष में खड़ा हो जाना चाहिए।

शेरे दिल सद्दाम ने ललकारा, शैतान की गर्दन काट डालो

इराकी टेलीविजन पर राष्ट्र के नाम अपने दूसरे सम्बोधन में शेरेदिल इराकी राष्ट्रपति शब्दों में दहकते हुए लेकिन चेहरे से शांत ने सद्दाम हुसैन ने कहा कि शैतान की गर्दन काट डालो। अल्लाह के करम से इराकी शैतान के होश उड़ा देंगे। इराकी दुश्मन को ऐसा सबक सिखाएंगे, जिसे वे जिंदगी भर नहीं भूल पाएंगे। वह सैनिक पोशाक में थे। अपने दूसरे संबोधन में जनता मनोबल बढ़ाते हुए नजर आए। यह स्पष्ट नहीं है कि सद्दाम का राष्ट्र के नाम यह संबोधन रिकार्डेड था अथवा सीधा प्रसारण लेकिन संबोधन में उम्म कसर का हवाला आने से इतना तय है कि यह भाषण ताजा है।

लेखक/लेखिकाओं के लिए

1.काग़ज के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठ्य अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाएँ भेजें।

2.रचना के साथ पर्यापत टिकट लगा, लेखका का पता लिखा लिफाफा आना चाहिए। इसके अभाव में, हम रचना से संबंधित किसी भी बात का उत्तर नहीं देंगे।

3. रचना के प्रथम पृष्ठ पर लेखक का पूरा नाम और अन्त में लेखका का पूरा अंकित होना चाहिए।

4. कोई भी रचना लगभग पन्द्रह सौ शब्दों से अधिक की न भेंजे।हम लेखकों फिलहॉल कोई पारिश्रमिक नहीं देते हैं।

सूक्तियां

अगर गुस्सा आ जाये तो खामोश हो जाओ।

हज़रत मुहम्मद

vxj[kq'k jguk pkgrs gks rks eqLdjkuk h[kyksA rkmh

बाबा इलेक्ट्रॉनिक्स

शाही कटरा, सिविल लाईन्स, देवरिया

वक्त के थपेड़ो ने सद्दाम को तानाशाह बनाया

सद्दाम हुसैन का जन्म 28 अप्रैल 1937 को अल–बुनासिर जनजाति में हुआ था। उनका परिवार बगदाद के 100 मील उत्तर–पश्चिम में टिकरित नामक शहर के समीप अल–औजा गांव में रहता था। हम उम्र इराकी बच्चों की तरह सद्दाम के जन्म का पंजीकरण नहीं हो सका। लिहाजा उसकी जन्म तिथि के बारें में मतभेद है।

उनका बचपन बहुत कष्ट में बीता। उनकी मॉ सबा उसी गांव में ज्योतिषी थी और लोगों का भविष्य बताकर उसे जो कुछ भी मिलता था उसी से परिवार का भरण–पोषण होता था। सद्दाम के जन्म के कुछ ही दिनों के बाद उसने पिता हुसेन अल–मजिद उन्हें छोड़ कर कहीं चले गये। उसने सौतेले पिता हसन अल–इब्राहिम ने हीं उन्हें पाल पोस कर बड़ा किया। उनके सौतेला पिता इब्राहिम उन्हें अक्सर मारते–पीटते रहते थे और उसने शिक्षा से भी वंचित रक्खा। बिना बाप का बेटा कहकर छेड़ने वालों के लिए सद्दाम लोहे ही राड लेकर चलते थे। हालात ने उन्हें उम्र बचपन की दिमाग पचपन का बना दिया। उन्हें अपने चाचा खैरल्लाह तुल्फा से भरपुर प्यार मिला। उनके चाचा तुल्फा ने 10 वर्ष की उम्र में ही उन्हें प्रतिद्वंदी अल–औजा जनजाति के आक्रमणकारियों के हाथों मरने से बचाया था। उनके चाचा ने उन्हें बगदाद लाकर उनकी पढ़ाई का समुचित प्रबंध किया। आगे चलकर तुल्फा की बेटी से ही सद्दाम का विवाह हुआ। उनके जीवन पर अपने चाचा खैरल्लाह का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उसने उनके दिमाग में ब्रिटेन के प्रति घृणा–भाव, इराक का सर्वेसर्वा बनने का ख्वाब और हिटलर के प्रति प्रशंसा के भाव कूट–कूट कर भर दिये। मां–बाप के प्यार की कमी ने उनमें बचपन से ही किसी पर भी विश्वास न करने का भाव भर दिया था।

50 के दशक में इराक के राजनीतिक पटल पर ब्रिटिश साम्राज्य के पैर लखखड़ा रहे थे और इसी दौरान सद्दाम बाथ पार्टी में शामिल हो गये। 1944 में गठित इस पार्टी का मूल उद्देश्य ए क संयुक्त अ र ब रा ज्य क ी स्थापना करना था। अपनी पार्टी के लिए सद्दाम का पहला काम कम्यूनिष्ट नेता सादोऊ अल–टिकरिती की हत्या करना था। 1959 में दंगों में इराकी शाही परिवार की हत्या के बाद वहॉ अब्दुल करीम कासिम के नेतृत्व में सैनिक तानाशाह का कब्जा हो गया। उसी साल बाथ पार्टी ने सैनिक शासक की हत्या कर सद्दाम को सत्ता सौपने का निर्णय लिया। मगर दाल न गली और सद्दाम को भागकर सीरिया में शरण लेनी पड़ी।

इस असफल सत्ता पलट के लगभग 4 साल बाद वह दमिश्क और काहिरा में रहे। बाथ पार्टी ने उनकी असफलता को नजरअंदाज करते हुए सद्दाम को पूर्णकालिक सदस्य बना दिया और यही से उनके राजनीतिक भाग्य का उदय हुआ। 1963 में उन्हें इराक वापस भेज दिया गया। मगर सत्ता हथियाने के आरोप में दो वर्ष जेल की सजा काटनी पड़ी। जेल से छूटते ही बाथ पार्टी के इराकी शाखा के नेता अहमद हसन अल–बकर के नेतृत्व में बाथ पार्टी ने 17 जूलाई 1968 को बगदाद के राजमहल पर धावा बोल दिया और सत्तासीन हो गये। बाद में सद्दाम की महत्वपूर्ण भूमिका के कारण अल–बकर राष्ट्रपति बने और उन्हें तोहफे में उपराष्ट्रपति का पद सौंपा गया जिस पर वह 11 वर्ष तक विराजमान रहे। इराक में विकास में कार्यो के लिए यूनेस्कों ने पुरस्कृत भी किया। इसके बाद तो उनके सपनों के पंख लग गए। 70 के दशक में सद्दाम पर मध्य–पूर्व हुकूमत का भूत सवार हुआ। जूलाई 1979 में उन्होंने अल–बकर को सत्ता छोड़ने और खुद को राष्ट्रपति बनाने की मांग की। इसके लिए उन्हें अपने 66 साथियों के खून की होली खेलनी पड़ी और वह राष्ट्रपति के पद पर पहुँच गए।

ऐक्सेल पॉली क्लीनिक
डॉ0 धर्मेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
(B.E.H.S) RNo- D3947
क्या आप शुगर, लिकोरिया, चर्म, पेट रोग के मरीज है?
100% गारण्टी के साथ मिले।
कोई साइड इफेक्ट नहीं।
स्थान : 196B/2K, प्रियदर्शनी नगर, आदर्श नगर काली मंदिर के पास, नयापुरा, करैली, इलाहाबाद
फोन ☎ : 0532-2616634

तेंदुलकर बने 'मैन ऑफ द टूर्नामेंट'

0y { ehgtksvjh

विश्व कप में अपने बल्ले से रनों की बरसात करने वाले मास्टर ब्लास्टर, परफेक्ट टेन, तेंदल्या, बूचर ऑफ ब्रांद्रा सचिन तेंदुलकर को फाइनल मैंच होने से पहले ही मैंन ऑफ द टूर्नामेंट घोषित कर दिया गया। फाइनल के बाद वेस्टइंडीज के महान आलराउंडर सन गारफील्ड सोबर्स ने तेंदुलकर को करीब 30 लाख रूपये की यह गोल्डन ट्राफी प्रदान की।

इस पूरे टूर्नामेंट के दौरान सचिन तेंदुलकर ने 11 मैंचो में 66.90 के औसत से एक शतक तथा छह अर्धशतकों की मदद से कुल 673 रन बनाए। विश्व कप के इतिहास में सचिन सबसे ज्यादा रन बनाने वाले पहले बल्लेबाज है। इससे पहले यह रिकार्ड पाकिस्तान के जावेद मियादाद के नाम था।

24 अप्रैल 1973 में मुंबई, महाराष्ट्र में जन्में सचिन रमेश तेंदुलकर दाएं हाथ के गेंदबाज, लेग ब्रेक, ऑफ ब्रेक व मध्यम तेज गति की गेंदें फेंकते हैं। वे भारत में मुंबई व काउंटी में यार्कशायर की ओर से खेल चुके है। पहला टेस्ट मैंच उन्होंने 15 से 20 नवंबर को कराची में पाकिस्तान के खिलाफ खेला। पहला वन डे 18 दिसंबर 1989 को गुजरांवाला में पाकिस्तान के खिलाफ खेला, पहले वन डे में उनका स्कोर दो गेंद शून्य रन था।1997 में विजडन ने क्रिकेटर ऑफ द ईयर का खिताब प्रदान किया।

काश! अवार्ड नहीं कप मिलता : सचिन

विश्व कप में 'मैन आफद टूर्नामेंट' घोषित किए गए सचिन तेंदुलकर फाइनल में अपनी टीम की नाकामी से व्यथित हैं। मास्टर ब्लास्टर ने कहा कि उनके लिए विश्व कप जितना इस पुरस्कार से कहीं ज्यादा मायने रखता।

सचिन के बारें में विशिष्ट जनों की राय

अरे, यह लड़का तो मेरी तरह बल्लेबाजी करता है।

क्रिकेट पितामह सर डॉन ब्रेडमैन

सचिन तेंदुलकर केन्यायी टीम के लिए सबसे बड़ी बाधा है। **संदीप पाटिल**

कोच, केन्याई टीम

सिर्फ सचिन तेंदुलकर ही आस्ट्रेलिया के विजय रथ को रोक सकते है। **ग्रीम पोलाक**

क्रिकेटर, दक्षिणी अफ्रिका

आस्ट्रेलिया की टीम को रोकने की कूवत सिर्फ सचिन तेंदुलकर में है। **द इंडिपेंडेंट,**

ब्रिटिश, अखबार

भारत को तंदुलकर विजयी बना सकते है।

स्टीव वॉ,

टेस्ट कप्तान,ऑस्ट्रेलिया, संडे टाइम्स, अपने कॉलम में

भारत का अभियान काफी हद तक सचिन पर निर्भर करेगा। सचिन ने पाक के खिलाफ शानदार पारी खेली। सपाट पिच पर भारत के आक्रमण की बात की जाए तो यह बिना दांतो के बाघ जैसा है। इसलिए उनकी सफलता का दारोमदार सचिन पर है।

साइमन वाइल्ड

संडे टाइम्स के अपने कॉलम में

विश्व कप के अब तक फाइनल

वर्ष 1975 : वेस्टइंडीज ने आस्ट्रेलिया को 17 रनों से हराया

वर्ष 1979: वेस्टइंडीज ने इंग्लैंड को 92 रन से हराया

वर्ष 1983 : भारत ने वेस्टइंडीज को 43 रन से हराया

वर्ष 1987: आस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड को 7 रनों से हराया

वर्ष 1992 : पाकिस्तान ने इंग्लैंड को 22 रनों से हराया

वर्ष 1996 : श्रीलंका ने आस्ट्रेलिया पर 7 विकेट से जीत दर्ज की

वर्ष 1999 : आस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान पर 8 विकेट से जीत पाई

वर्ष 2003: आस्ट्रेलिया ने भारत को 125 रनों से हराया।

भारतीय क्रिकेट टीम के सितारे

सौरव चंडीदास गांगुली

जन्म : 8 जुलाई 1972
जन्म स्थान : कलकत्ता
पहला टेस्ट : 20–24 जून 1996, लाड्‌र्स पर इंग्लैंड के खिलाफ, **गेंदबाजीः** पहली पारी 15–2–49–2, दूसरी पारी 3–0–5–1
पहला टेस्ट प्रदर्शनः 131 रन,
पहला वन डे : 11 जनवरी 1992, ब्रिस्बेन में वेस्टइंडीज के खिलाफ
पहले वन–डे प्रदर्शन : 3 (13)
सौंरव गागुली के पास ऑफ साइड शाट्‌स की भरमार है। वह वन–डे के सबसे कामयाब ओपनिंग बल्लेबाज है।

वीरेंद्र सहवाग

जन्म : 20 अक्टूबर 1978
जन्म स्थान : दिल्ली
पहला टेस्टः 3 –6 नवंबर 2001 ब्लोफोंटेन में दक्षिण अफ्रिका के खिलाफ
पहला टेस्ट प्रदर्शनः 105, 31
पहला वन डे : 1 अप्रैल 1999, मोहाली में पाकिस्तान के खिलाफ
पहले वन–डे प्रदर्शन : 1 (2)
सहवाग बल्ला घूमते ही दोनों कलाइयों की सहायता से जोरदार प्रहार करते है।
भारतीय टीम के सितारे

रमेश पी0सी0ओ0
एवं लोहा भण्डार
लार रोड, देवरिया
☎:236861, 284061
प्रो0 : रमेंश चन्द्र गुप्त

अनिल कुंबले

जन्म : 17 अक्टूबर 1970
जन्म स्थान : बंगलौर
पहला टेस्टः 9 –14 अगस्त 1990, इंग्लैंड के खिलाफ मैनचेस्टर में
पहला टेस्ट प्रदर्शनः 43–7–105, 17–3–65–0
पहला वन डे : 25 अप्रैल 1990 शरजाह में श्रीलंका के खिलाफ
पहले वन–डे प्रदर्शन : 10–0–42–1
काउंटी खोलेः नॉर्थम्पटनशायर और लीस्टरशायर के लिए
विशेषः टेस्ट की एक पारी में 10 विकेट

मोहम्मद कैंफ

जन्म : 1 दिसम्बर 1980
जन्म स्थान : इलाहाबाद
पहला टेस्टः 2–6 मार्च 2000, बगलौर में दक्षिणी अफ्रिका के खिलाफ,
पहला टेस्ट प्रदर्शनः 12, 23
पहला वन डे : 28 जनवरी 2002, कानपुर में इंग्लैड के खिलाफ
पहले वन–डे प्रदर्शन : बल्ले बाजी नहीं की।
भारत के लिए कई बार संकटमोचक साबित हुए है।

हरभजन सिंह

जन्म : 3 जुलाई 1980
जन्म स्थान : जालंधर
पहला टेस्टः 25–28 मार्च, 1998, बंगलौर में आस्ट्रेलिया के खिलाफ
पहला टेस्ट प्रदर्शनः 23–1–112, 6–1–24–0
पहला वन डे : 17 अप्रैल 1998 शरजाह में न्यूजीलैंड के खिलाफ
पहले वन–डे प्रदर्शन : 10–0–32–1
काउंटी खेलेः नॉर्थम्पटनशायर और लीस्टरशायर के लिए
विशेषः आस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू श्रृंखला में ऐतिहासिक जीत।

भारत का विश्व कप तक का सफर

पूल

हालैंड को 68 रनों से
आस्ट्रेलिया से नौ विकेट से हारा
नामीबिया को 181 रनों से
इंग्लैंड को 82 रनों से
जिंबाब्वे को 83 रनों से
पाकिस्तान को 6 विकेट से

सुपर सिक्स

न्यूजीलैंड को 7 विकेट से
श्रीलंका को 183 रनों से
केन्या को 6 विकेट से

सेमीफाइनल

केन्या को 91 रनों से

फाइनल

आस्ट्रेलिया से 125 रनों से हारा

क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति कारगर है?

शिक्षा को जहॉ तक हो सके रोजगार परक बनाया जाना

एक पढ़ा लिखा विद्वान नौजवान सबसे सस्ता है। एक मजदूर अनपढ़ प्रतिदिन 60से 80 रूपये प्रतिदिन कमाता है जबकि एम.ए. एम.एस.सी, बी.एड. स्कालर मात्र 10रूपये से लेकर 40 रूपये प्रतिदिन पाता है। सरकार को विद्वान छात्रों की उसकी योग्यता अनुसार आवश्यक वेतनमान निर्धारित किया जाना चाहिए।

प्रश्न 1. शिक्षा में इतनी गिरावट क्यों?

प्रश्न 2. क्या शिक्षा में आयी गिरावट के लिए अध्यापक दोषी है या अभिभावक दोषी है या तीनों?

प्रश्न 3. वर्तमान शिक्षा पद्धति में सुधार किया जा सकता है?

आज की शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। वर्तमान शिक्षा पद्धति अब किसी कार्य के लिए कारगर साबित नहीं हो रही है।

शिक्षा को जहॉ तक हो सके रोजगार परक बनाया जाना चाहिए : जी0के0द्विवेदी

शिक्षा में आई गिरावट के लिए हमारे संचार माध्यम अधिक दोषी है। टी.वी. के प्रोग्राम अश्लीलता व फूहड़पन से भरे परे होते है। सरकार स्वयं चाहती है कि शिक्षा में गिरावट होती रहे ताकि वोट वैंक बना रहे। जनता शिक्षित होगी तो बेवकूफ बनकर कभी आरक्षण, कभी मंदिर–मस्जिद तो कभी जाति के नाम पर अपना उल्लू सीधा करते रहेंगे। शिक्षा में आयी गिरावट के लिए छात्र नहीं बल्कि अध्यापक व अभिभावक दोषी है। जब छात्र अभिभावक के ही बस में नहीं रहते तो शिक्षक क्या संभालेगा। जब छात्र विनयशील नहीं होगा तो पढ़ेगा क्या। अभिभावक गण विनय या सदाचार तो खुद ही भूल गये है। अध्यापकों ने ट्यूशन व कोंचिग के नाम पर अपना पतन खुद कर लिया है। वह पैसे के चक्कर में नकल कराता है। उन्हें परीक्षा में आने वाले प्रश्नों को पहले ही बता देता है। शिक्षा में एक निर्धारित फीस ली जानी चाहिए।

आज की शिक्षा उद्देश्यविहीन है

कैलाश चन्द्र शाहजगाती,

शिक्षा में गिरावट के लिए दो मुख्य कारक जिम्मेदार है–1. शिक्षा की व्यवस्था का उचित न होना। 2.शिक्षा में दोहरी व्यवस्था का होना। कुछ व्यवस्था सरकार करती है और कुछ व्यवस्था प्रबंधक करते है, जिससे अध्यापकों की चांदी हो जाती है। सरकारी विद्यालयों में अध्यापकों पर किसी प्रकार का कोई नियंत्रण नहीं है। जो शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है। शिक्षा इतनी मंहगी हो गयी है कि सामान्य व्यक्ति इसके बारें में दस बार सोचता है। कुछ हद तक राजनीतिक भी इसको चौपट करते है।। आज के अध्यापक पढ़ाते कम है राजनीति अधिक करते हैं। पंचायत, प्रधान, ब्लाक प्रमुख, एम.एल.सी. एम.एल.ए. एम.पी का चुनाव अध्यापक लड़ता है तो उसके साथी अध्यापक व छात्र भी लग जाते है। आज की शिक्षा उद्देश्य विहिन है।ै। शिक्षा में प्रवेश पान अर्थ पर आधारित हो गया है।

शिक्षा में आयी गिरावट के लिए छात्र अध्यापक या अभिभावक नहीं बल्कि वातावरण दोषी है। टी.वी. के प्रोग्राम अश्लील अधिक ज्ञानपरक कम होते है। शिक्षा माता–पिता के समन्वय से चलती है। इसलिए शास्त्रों में भी लिखा है मातृदेव, पितृदेव मन आचार्य देवो भव। छात्र दोषी कम है छात्र तो पढ़ना चाहते है मगर अभिभावक व शिक्षक उसे पढ़ने नहीं देते है। शासन भी इसकी जिम्मेदार है। शिक्षक का पद लाभ का पद घोषित किया जाए। अध्यापकों राजनीति के लिए अनुमति नहीं मिलनी चाहिए। अध्यापन कार्य के लिए समूचित आचार्य संहिता बनायी जाए। शिक्षकों को अधिक से अधिक सुविधा प्रदान की जाए। जिससे शिक्षक शिक्षा के प्रति पूर्णतः समर्पित हो। इसके प्रति उत्तर दायी हो। दोहरी शिक्षा पद्धति को समाप्त किया जाए। शिक्षा को पूर्णतः आकार दिया जाए या तो शिक्षा को पूर्णतः प्रबंधक को सौंप दी जाए या सरकार अपने कब्जे में ले ले। शिक्षा को रोजगार परक बनाया जाना चाहिये। पूरे देश में एक ही पाठ्यक्रम होना चाहिए जिससे छात्रों को देश में कही भी जाने पर समस्या न हो। शिक्षा को रूचि कर बनाया जाना चाहिए। विभिन्न प्रकार के सहयोगी पाठ्यक्रम चलाये जाने चाहिए व समय समय पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का अयोजन किये जाने चाहिए। कक्षा में शिक्षक व छात्र का रेशियो 1 : 35 का होना चाहिए।

उप प्रबंधक, एवं पूर्व प्रधानाचार्य, रणजीत पं0 इं0कॉलेज, नैनी, इलाहाबाद

शिक्षा से आरक्षण को पूर्णतया हटा देना चाहिए। गरीब, अल्पसंख्यकं एवं पिछड़े छात्रों को सुविधाएं दी जानी चाहिए आरक्षण नहीं। आरक्षण से छात्रों में कुन्ठायें पनपती है। माता–पिता को बचपन से ही अपने बच्चों को सदाचार सिखाना चाहिए। शिक्षा को जहॉ तक हो सके रोजगार परक बनाया जाना चाहिए। अध्यापकों को इतनी सुविधा विद्यालय से ही दिया जाना चाहिए जिससे उसे अन्य संसाधनों का सहयोग न लेना पड़े। नैतिकता व सदाचार का बढ़ावा देना चाहिए। आज एक पढ़ा लिखा विद्वान नौजवान सबसे सस्ता है। एक मजदूर अनपढ़ प्रतिदिन 60से 80 रूपये प्रतिदिन कमाता है जबकि एम.ए. एम. एस.सी, बी.एड. स्कालर मात्र 10रूपये से लेकर 40 रूपये प्रतिदिन पाता है। सरकार को विद्वान छात्रों की उसकी योग्यता अनुसार आवश्यक वेतनमान निर्धारित किया जाना चाहिए।

शिक्षा में आयी गिरावट का मुख्य कारण अनुशासनहीनता व अभिभावकों का केयरलेस होना है

: डॉ0 श्रीमती मंजूला चौधरी

शिक्षा में आयी गिरावट का मुख्य कारण अनुशासनहीनता व अभिभावकों का केयरलेस होना है। सारी की सारी जिम्मेदारी अध्यपको के ऊपर हो जाती है। नाम लिखवा दिया, किताब कापी खरीद दिये बस बच्चों से कोई मतलब नहीं। क्या पढ़ रहा है आज लगभग 90 प्रतिशत अभिभावक ऐसे मिलेगें। उच्च वर्गो के अभिभावकों में तो यह और अधिक पायी जाती है। एक दूसरा कारण है स्त्रियों का अशिक्षित होना। स्त्रियॉ अशिक्षित होने के कारण अपने बच्चों को देख ही नहीं पाती कि क्या पढ़ रहा है। टी.वी. भी शिक्षा में आयी गिरावट का एक कारण है। बच्चे टी.वी. का प्रोग्राम देखने के लिए स्कूल से बहाना बनाकर छूट्टी ले लेते है। टी.वी. बच्चों के ऊपर हावी हो गयी है।

प्रधानाचार्य, शिक्षकों का वेतन आधा कर उन पैसों से फैक्ट्रिया लगाकर बेरोजगारों को काम दिया जाय

पं0 श्यामाचरण द्विवेदी,

शिक्षा में आयी गिरावट के लिए सरकारी मशीनरी जिम्मेदार है। जितनी शिक्षा की योजनाए बनती है वो व्यवहारिक कम बनती है। शिक्षकों का अधिक वेतन होना भी एक मुख्य कारण है। मेधावी छात्रों का सुविधा विहीन होना, राजनीतिक दलों का शिक्षा के प्रति उदासीन होना, नकल करने की प्रवृति, अध्यापकों की असुरक्षा, समाज का कुंठित होना आदि कारण है। शिक्षा में आयी गिरावट के लिए सरकार दोषी है, छात्र, अध्यापक या अभिभावक नहीं।

शिक्षक व अभिभावक संघ की सही रिर्पोट दी जाए। अभिभावक जब तक सचेत नहीं होंगे तब तक शिक्षा में सुधार नहीं होगा। टी.वी. के अश्लील प्रोग्राम पर पूर्णतया रोक लगा दी जाए, टी.वी. व अन्य सूचना माध्यमों पर केवल मनोरंजक व ज्ञान बर्द्धक प्रोग्राम ही दिए जाए। टी.वी. से तो बच्चों को टी.वी. हो गया है। नशे की लत पर रोक लगायी जाय। सामाजिक वृत्ति का पुर्नजन्म हो। प्रधानाचार्य, शिक्षकों का वेतन आधा कर उन पैसों से फैक्ट्रिया लगाकर बेरोजगारों को काम दिया जाय। शिक्षक को केवल शिक्षक ही रहने दिया जाए।

प्रधानाचार्य, सुभाष चन्द्र इंटर कॉलेज, छीतूपूर, कर्मा, इलाहाबाद

शिक्षा में आयी गिरावट के लिए दोनों दोषी है। इसमें किसी एक को इसका दोषारोपण नहीं किया जा सकता है। लेकिन प्राईवेट अध्यापकों को नहीं। भ्रष्टाचार भी शिक्षा में आयी गिरावट के लिए दोषी है। गार्जियन को जब स्कूल में बुलाया जाता है तो वह आता ही नहीं, जो गार्जियन स्कूल में आकर यह पता नहीं लगा सकते कि हमारे लड़के में क्या कमी है तो अध्यापक कहॉ तक देख भाल करेगा।

अर्थप्रधान समाज को अगर कुछ परिवर्तित किया जाय तो सुधार हो सकता है। आज इंसान इतना व्यस्त है कि बच्चा कब स्कूल जाता है, जाता है कि नहीं जाता। इसका ध्यान हीं नहीं रहता। अगर प्रत्येक गार्जियन समय निकालकर सुबह–शाम ही 15 से 20 मिनट ही देखे तो सुधार हो सकता है। स्त्रियों को शिक्षित कर उनको बच्चों के प्रति अगर जागरूक किया जाय तो भी शिक्षा में सुधार हो सकता है।

ऐसी शिक्षा दी जानी जो प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए मार्ग प्रशस्त करें:

श्री देवशरण पाण्डेय

शिक्षा में आयी गिरावट का मूल कारण अध्यापकों का छात्रों के प्रति व शिक्षा के प्रति उदासीन होना है। पूराने शिक्षक अपने पेशे के प्रति वफादार हुआ करते थे। दूसरा कारण शिक्षा का व्यवसायी करण है।

शिक्षा में आयी गिरावट के लिए समाज व गार्जियन कुछ हद तक जिम्मेदार है। आज सामाजिक स्तर व परम्पराएं गिर रही है। गार्जियन का अध्यापकों के प्रति दुर्व्यवहार छात्रों द्वारा शिक्षकों का सम्मान न देना, अध्यापक का कर्तव्यविमुख होना, यानी हम तीनों को जिम्मेदार ठहरा सकते है।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में सुधार के लिए निम्न चार बिदुओं को अपनान होगा। 1. सदाचार 2. सहयोग 3. सम्पर्क 4. शिक्षा

छात्र व अध्यापक मं अन्नयोश्रित सम्बंध होता है। अगर कोई शिक्षा चरित्र का निर्माण नहीं कर सकती तो उसे मैं कुशिक्षा ही कहुँगा। गॉधी जी ने कहा था– बालक को ऐसी शिक्षा दी जाए जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए मार्ग प्रशस्त करे। छात्र, अभिभावक व अध्यापक के बीच तारतम्य स्थापित किया जाना चाहिए।

धारावाहिक उपन्यास

दिल का पैगाम

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
एम.ए., एम०सी०ए०
प्रकाशित रचनाएं- विभिन्न पत्र एवं पत्रिकाओं में लेख, कविताएं प्रकाशित। आकाशवाड़ी के युवा मंच से जुड़ाव, रिर्पोटर जनमोर्चा हिन्दी दैनिक
सचिवः जी.पी.एफ.सोसायटी,
प्रांतीय महासचिव : राष्ट्रीय जनचेतना, उ०प्र०
प्रकाशनाधीनः लघुउपन्यास 'रोड इन्सपेक्टर एवं उपन्यास 'दिल का पैगाम', कविताएं 'यमुनापार के कवि'
सम्पर्क सूत्रः एल.आई.जी. ६३, नीम सराय, कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **बातचीतः**२५५२४४४

अब तक आपने पढ़ा–

नौवी किस्त

0 अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है। अनिल की दोस्ती साथ पढ़ने वाली, लड़की अनु से होती है, तीनों कम्प्यूटर कोर्स करते है। अनिल और अनु की दोस्ती प्रेम का रुप ले लेती है, परन्तु एक–दूसरे का पता मालुम न होने के कारण दूरियां बन जाती है।

0 अनिल व सावन अनु के घर का पता ढूढने डा0 रेखा के घर जाते है। वहाँ सावन की मुलाकात मोना से होती है और वे एक दूसरे को दिल दे बैठते है।

0 अनिल, सावन, अनु, मोना, बबली और शालू पार्क में मिलते है। वहाँ शालू अनू से बताती है कि वह सावन से प्यार करती है। सावन अपने और मोना के बारे में अनू को बताता है।

0 सावन मोना से अपने दोस्त विशाल के द्वारा एक लड़की के पीछे पड़ जाने पर हो रही बदनामी के चलते आत्महस्या किये जाने के बारे में बताता है।

और अब आगे....

मगर बिट्टू आज भी खुशहाल है और वह किसी और के साथ इश्क फरमा रही है। उसे विशाल की बर्बादी और मरने का कोई गम नही है। विशाल मरने पहले एक पत्रा उस लड़की को दे दिया होता है जिसमें लिखा होता है–

"ओ मेरी प्रिया, बिट्टू
तुम सदा मुस्कराती रहो।

तुम युग–युग जीओ, तुम्हें मेरी बाकी उमर भी लग जाए। क्योंकि अभी मैं और दिनों तक जीवित रहता मैं तो आज तुमसे विदा लेकर हमेशा के लिए जा रहा हूँ। बस एक मलाल दिल में लिए जा रहा हूँ कि मैं अपनी पूजा का बदला न ले सका। लेकिन मुझ इस बात का फक्र भी है कि मेरे कारण मेरे मॉ–बाप को अपमान नहीं सहना पड़ेगा। शायद मैं अपने कारण मॉ–बाप का अपमान होना सहन न कर पाता। इस तड़प को सहने से बेहतर है कि मैं इस मायावी संसार को ही अलविदा कह दूँ। मैंने तुम्हारें नाम का जिक्र कहीं नहीं किया है। अगर किसी तरह मेरे दोस्तों, हमदर्दो से पापा–मम्मी को मेरे मरने का कारण मालुम हो जाए और वे लोग तूझसे कुछ पूछे तो तुम साफ नकार जाना। और सारा दोष मुझ पर मढ़ देना। अगर अनजाने में मुझसे कोई गलती हो गयी हो तो मुझे माफ कर देना। मैं तो एक कच्चा खिलाड़ी निकला।

आखिरी अलविदा।
तुम्हारा ही कोई
अपना।

दूसरा खत वह अपने माता–पिता के नाम लिख कर कमरे में ही रख जाता है।

आदरणीय पापाजी एंव मम्मी जी सादर चरण स्पर्श

आप लोगों को मेरा आखिरी प्रणाम। शायद मेरी जिन्दगी आज तक ही थी। आज रात को ठीक 12 बजे मैं चला जाऊँगा। आज अमावस की रात है और अमावस की रात को ही मैं जन्मा भी था शायद। किन्तु मैं अमावस की रात को जन्म लेने के बावजूद आप लोगों के लिए चिराग बना रहा। आज की अमावस की रात ही इस चिराग को बुझाने के लिए तत्पर है। और मुझे बुला रही है। मैं स्वेच्छा से जा रहा हूँ। क्योंकि मैं आगे अपने आपको कुल का चिराग बनने में असमर्थ पर रहा हूँ। मैं अबकी वर्ष परीक्षा भी पास न कर पाता, कुछ गंदी आदत भी डाल रक्खी है, जो आप लोगों के कुल की मर्यादा के खिलाफ है। आज के ठीक तीन महीनें बाद 20 वर्ष का हो जाऊँगा, यानि आज मैं 19 वर्ष 9 महीने का हो गया हूँ। इस लम्बें अंतराल में मैंने बहुत सी गल्यिॉ की होगी। मुझे माफ कर दीजिएगा। मेरा आखिरी प्रणाम आप लोग स्वीकार कर लीजिएगा और आर्शीवाद दीजिएगा और भगवान से यही प्रार्थना कीजिएगा कि मैं जन्मू तो आपके साये में, मम्मी के ऑचल में किन्तु उस समय हमारा समाज आज का न हो। मेरी भी भगवान से यही प्रार्थना है कि जन्मों जन्मान्तर मुझे आकाश के समान मेरे पापा, पृथ्वी के समान मेरी मम्मी हमेशा दे।

खुदा हाफिज
आपका अभागा पुत्रा
विशाल

वह लड़की आज भी खुशी से और मजे से जी रही है। वह पहले से भी ज्यादा खुश है क्योंकि आज उसे अधिक पैसे वाले प्रेमी मिल गये है। यह कहा जाय कि वह सच्ची प्रेमिका नहीं, बल्कि प्रोफेशनल प्रेमिका है तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। कहानी सुनाते–सुनाते सावन की आँखे नम हो जाती है। मोना कहती है–

"सावन, मेरी जान। आप रोते भी है? मैंने तो कभी सोचा भी न था कि आपको अपने दोस्त की कहानी से इतना दर्द होगा, तो मैं आपको कभी इतना बाध्य न करती।

(मोना अपनी रूमाल से सावन के आँसू को पोछती है।) प्लीज सावन, इन मोतियों को मत निकालिए। ये मोती मेरी जान निकाल देगें। वैसे आपके दोस्त को आत्महत्या नहीं करनी चाहिए। और अगर आत्महत्या करनी भी थी तो उस डायन को तड़पा–तड़पा कर मारकर। वह लड़कियों के नाम पर कलंक है।"

"मैंने तो उसे बहुत ही समझाया था। मगर वह नहीं माना। वह तो ऐसा हिम्मती लड़का थी जो बहुत ही खतरनाक सिथिति को भी हँसते हुए सह लेता था और उसका समाधान निकाल लेता था। वह बड़े से बड़े ग़म को यों ही झेल जाता था। उसने प्यार किया, मगर प्यार ने उसे बर्बाद किया। पता नहीं उस काली नागिन ने उसे क्या कर दिया कि उसके सहने की हिम्मत जाती रही। जानती हो मोना, मेरा तो जी चाहता है कि उसे गला दबाकर मार डालू। जब भी वह दिखती है मुझे अपने प्यारे दोस्त का मासूम सा चेहरा नजर आता है। कहाँ विशाल और कहाँ वह नागिन। मगर अपने को संभल जाएगी और फिर उसे मारने से विशाल लौट के तो नहीं आएगा।"

"सावन, आप साथ है तो मैं उससे आपके दोस्त का बदला अवश्य लूगी। मैं भी एक लड़की हूँ और एक लड़की ही काली और दुर्गा भी। उसने जिस तरह लड़कियों के नाम को कलंक लगाया है, उसके इस कलंक के लिए उस कलंकिनी को ऐसा सबक सिखाऊँगी कि प्यार क्या होता है, उसे समझ में आ जायेगा।"

(सावन मोना के गुस्से को देखकर)अरे जानेमन! गुस्सा थूक भी दो। वरना तुम्हें कुछ हो गया तो मैं जीतेजी मर जाऊँगा। तब तुम खुद क्या करोगी?

आप ऐसी बातें दुबार मत कीजिएगा। आपके अलावा मैं किसी अन्य की सूरत भी देखना पसंद नहीं करूँगी। प्रत्येक लड़के और लड़की को एक और केवल एक ही साथी का चुनाव करना चाहिए। और उसी को अपना सब कुछ मानना चाहिए। सावन आप और आपके दोस्त तो अजीबो–गरीब परिस्थितियों से गुजर चुके हैं और शायद इसी कारण आपने आज तक किसी को नहीं चुना। क्या मैं गलत कह रही हूँ?

भाई, मुझे तो अपनी प्यारी, अप्सरा के समान, सावन की जिन्दगी में चार –चाँद लगाने वाली मोना जिसके आगे चाँद भी सरमाकर छूप जाए। उस स्वप्न सुन्दरी की तलाश थी। अगर मैंने किसी और को चुना होता तो फिर तुम कैसे मिलती और फिर शायद इस बंदे को भी कोई काली नागिन डस ली होती तो आज सावन, सावन न रहता।

"आप बड़े वो हैं। बातें बड़ी ही प्यारी–प्यारी, शहद के समान मीठी करते हैं। क्या केवल मीठा ही खाते हैं आप?"

"जहाँ इतनी प्यारी–प्यारी, मीठी चीज हो वहाँ कड़वी, नमकीन, खट्टी चीज कुछ मजा नहीं देता........।"

बड़े ही मनमोहक अंदाज में सर हिलाते हुए कहता है। मोना, सावन के इस अंदाज पर खुशी से पागल हो जाती है और सावन के हाथों को चूम लेती है।

इतने में बबली, सावन और मोना के पास आती है और कहती है– अरे भईया, माना, मोना का दिल आपके कब्जे में है, किन्तु मोना तो हमारी आंटी–अंकल के कब्जे में है। इसलिए समय का थोड़ा ध्यान रक्खा कीजिए।

सभी एक दूसरे से विदा लेते है।

ग़ज़ल

जब हवा अपना रूख बदलती है
गर्द भी साथ साथ चलती है।
दिन का सूरज उफ़क में डूब गया
अब सितारों से लौ निकलती है
याद कर कर के अहद–ए–माज़ी को
ज़िंदगी अपने हाथ मलती है
झील में तैरते हैं कुछ काग़ज
देखें कब तक ये नाव चलती है
गुफ़्तगू उनकी चुभ गयी दिल में
देखें ये फाँस कब निकलती है
जी रहा हूँ मैं इस तरह से 'अतीक़'
जैसे क़िस्तों में रात ढलती है।।

अतीक़ इलाहाबादी

जायसवाल फोटों स्टूडियो

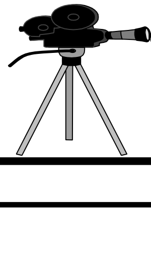

पकड़ी बाजार, नगवा चौराहा, पोस्टः वडीहा दल, देवरिया

प्रो0 सुरेश चन्द्र जायसवाल

अनाथआश्रम एवं बृद्धाआश्रम के सहायतार्थ सांस्कृतिक कार्यक्रम

"स्-NEह—2003"

गोकुल पब्लिक फाउन्डेशन सोसायटी एवं मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज के संयुक्त तत्वाधान में निर्माणधीन अनाथालय एवं बृद्धाआश्रम के सहायतार्थ एम.टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें डांस, सोलोसांग, बोल बेबी बोल तथा पर्सनल परफामेन्स में प्रतिभागियो नें भाग लिया। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ0 रीता बहुगुणा जोशी ने कहा—'आज युवाओं को समाज सेवा के लिए आगे आने की जरूरत है। ऐसे ही युवा गोकुलेश्वर कुमार द्विवदी का अनाथालय एवं बृद्धाआश्रम के सहायतार्थ कार्यक्रम करवाना एक सराहनीय योगदान है। मैं इसके लिए उन्हें तथा उनकी टीम को बधाई देती हूँ।

वरिष्ठ कवियित्री विजय लक्ष्मी विभा—' मैं अपने छोटे अनुज गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जिन्में मैं गोकुलेश कहती हुं के आग्रह पर श्री धर शास्त्री के कार्यक्रम को छोड़कर यहॉ पहुॅची। मुझे यहॉ आकर ऐसा लगा कि मेरा निर्णय सही था। ऐसा रमणीक प्रोगाम देखने से वंचित रह जाती। भाई गोकुलेश जी तो समाज सेवा के साथ—साथ नयी—नयी प्रतिभाओं को मंच भी प्रदान कर रहे है। मैं उन्हें इस पूनीत कार्य के लिए शत—शत बधायी देती हूँ।

मुख्य अतिथि :

डॉ0 श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी

कार्यक्रम संयोजक

श्री गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रधान संपादक, मासिक पत्रिका
'विश्व स्नेह समाज'

प्रायोजकः

मासिक पत्रिकाः—

'विश्व स्नेह समाज'

एम.टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर

धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

जजेज

1. श्रीमती मीनू तिवारी
निर्देशिका, सरस्वती संगीत विद्यालय, मुण्डेरा, इलाहाबाद
2. श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा
प्रसिद्ध गज़ल लेखिका, चकिया, इलाहाबाद
3. जितेन्द्र सिंह,
समाजसेवी, राजरूपपुर, इलाहाबाद

कार्यक्रम उदघोषक

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यक्रम सहयोगी : सूर्यकांत त्रिपाठी—सांस्कृतिक सचिव, महेश कुमार सिंह—कार्यक्रम अधिशांसी श्रीमती जया द्विवेदी— प्रोग्राम प्रबंधक,अनिल सिंह, सुनील सिंह एवं सीमा मिश्रा—सह प्रोग्राम प्रबंधक, आजाद गौर, अजय सिंह—प्रोग्राम सहायक,नीतेश केसरवानी, अनिल केसरवानी मोहसिन अब्बास—सुरक्षा प्रभारी।

विशेष आमंत्रित सदस्य

1. डॉ. कुसुमलता मिश्रा, कार्यकारी संपादिका 'विश्व स्नेह समाज' एवं समाज सेवी
2. श्री एन.पी. मिश्र, अवर अभियन्ता
3. श्री शम्भू नाथ मिश्र, ज्योतिषी एवं समाज सेवी

विजयी प्रतिभागियों के नाम

डांस

प्रथम : कुमारी शुभागी उपाध्याय
पुत्री श्री शरत चन्द्र उपाध्याय
टाईप थर्ड / 223, केन्द्राचल कॉलोनी, फेज—1, प्रीतमनगर, इलाहाबाद
द्वितीय :सविता मिश्रा पुत्री श्री शिवाकांत मिश्रा
562, राजरूपपुर, इलाहाबाद
तृतीय : मो0 इदरीस पुत्र श्री उमर सिद्दीकी, 56—बी, कॉलोनी न02,सुबेदारगंज, इलाहाबाद

सोलोंसाग

प्रथम वैशनवी सागर, पुत्री श्री सोहन लाल
39 / 11, सुबेदारगंज, इलाहाबाद
द्वितीय : मनीषा तिवारी,
पुत्री श्री विजय कुमार तिवारी
1056 / 1बी, लाल बाग कॉलोनी, राजरूपपुर, इलाहाबाद
तृतीयः मुकेश कुमार पुत्र श्री रमांकात तिवारी
सुलेम सराय, इलाहाबाद
सांत्वना : कु0 उमा शुक्ला
पुत्री श्री एच.के. शुक्ला,
1056 / 1बी, लाल बाग कॉलोनी, राजरूपपुर, इलाहाबाद

पर्सनल परफामेंन्स

शशि प्रकाश मिश्र पुत्र श्री एस.के.मिश्र
562, राजरूपपुर, इलाहाबाद

बोल बेबी बोल

प्रथम : फ़जीर अहमद पुत्र श्री सफ़ीक अहमद ग्राम व पोस्ट : असरावल कला, इलाहाबाद
द्वितीय हिमाशु गौर, म.न. 17, धुस्सा, इलाहाबाद
तृतीय हिमाशु श्रीवारतव पुत्र श्री अरूण कुमार श्रीवास्तव, 220ए / 2ए, कसारी मसारी, चकिया, इलाहाबाद

भूल सुधार

पेज संख्या 20 पर मार्च अंक में प्रकाशित कहानी "कन्या रत्न" के लेखक का नाम मुद्रंण त्रुटि के कारण नहीं आ सका था। इसके लिए हमें खेद है। इसकी लेखिका की जगह पर 'डॉ0 कुसुम लता मिश्रा 'सरल' नाम पढें।

एक तस्वीर

एस.ए.ए. रिज़वी

"किसी पवित्र किताब को मेरे सामने मत लाओ। हॉ मैं क़सम खाता हूँ। बहते हुए ख़ून की, मैं क़सम खाता हूँ सड़ती हुई लाश की, हॉ मैं क़सम खाता हूँ दहशत भरी चीख़–व पुकार की, कि मैं मुजरिम हूँ। मेरे शरीर की एक–एक रंग में जुर्म ख़ून बनकर दौड़ रहा है। मैंने कत्ल किये हैं। पैसों के लिए, मैंने अय्याशी भी की है, थोड़े सकून के लिए। दुनिया का कौन ऐसा जुर्म है जो मैंने नहीं किया? क्यों मैं ऐसा करता हूँ। कभी किसी ने सोचा है? कभी किसी को फर्सत मिली है। हमारे हाल पर गौर करने की, जो भविष्य के भारत के चमकदार सितारे थे, आज माथें का कलंक क्यों बन गये हैं? हम जैसे नौजवानों का हाथ बढ़ कर किसी ने पकड़ कर पूछा है कि हम क्यों ऐसा कर रहे हैं। कल तक जो आंखें हमारी तरफ़ उठती थी आज वहीं आखें हमारी तरफ देखना भी गवारा नहीं करती।"

इतना कहने के बाद वह रूककर वहॉ फैले हुए सन्नाटे की मैली चादर को देखने लगा। उसके होठों पर ज़हरीली मुस्कराहट फैल गई फिर वह बोला –"किताबों के वज़नी बोझा के नीचे ही सारा बचपन सिसकता हुआ गुज़र गया। कॉलेज और युनिवर्सिटी की पथरीली दीवारों से टकरा–टकरा कर जवानी के कितने ही सुनहरे दिन गुज़र गये। बाप के पसीने की बूँद में डूबा हुआ और मां–बहन के अरमानों की खुशबू से महकता हुआ एक कागज़ का टुकड़ा लेकर जब उन पथरीली दीवारों को फलांग कर बाहर आया और ऊँची–ऊँची शानदार इमारतों में जाकर उस कागज़ की नुमाईश की तो नाकामी और मुफलिसी की गर्म हवाओं से झुलस कर मां बाप का बेटे को डिप्टी कलक्टर बनाने का सपना देखते–देखते मर गये और बहन भाई को बड़ा आदमी बनने का इन्तेजार करते–करते जलकर मर गई। जब वही नाकाम और मुफ़लिस इनसान चिता की राख में डूब कर बाहर आया तो मारूति, कन्टेसा, हीरो हाण्डा की सनसनाटों ने तेजी पैदा कर दी। लड़खड़ाते क़दमों में और फिर जुर्म की अन्धेरों में जा फेंका। जहॉ जुआ, डांस और शराब की कड़वाहटें थके हुए जिस्म को राहत देने लगी। तुम लोग हमें मुजरिम, आतंकवादी के नाम से पुकारते हो, अरे तुम हो तो हो जो अपनी क़लम से, फिल्मों के जरिये जुर्म करने के नये–नये ख़ूबसूरत अन्दाज़ सिखाते हो। तुम तो अय्याशी और बेहाईयों के ऐसे–ऐसे नायाब नुस्खें बताते हो कि उसे देख कर मुजरिम तक एक बार सोचने पर मजबूर हो जाता हे कि क्या मां और बहन को भी इसी तरह नंगा किया जाता होगा? मुजरिम हम है। कहते हो तस्वीर के दो रूख़ होते है। अरे तुम तस्वीर का पहला रूख़ इतना चमकदार बनाते हो कि इनसान उसी के सपने देखने पर मजबूर हो जाता है। जब ऐसा इनसान दुनियॉ की सारी रंगीनिया समेटने के लिए आगे बढ़ता है तो लोहे की ज़ज़ीरे लम्बी होती जाती है और फ़ौलादी कंगन अपना घेरा बढ़ाते चले जाते है। तो फिर शुरू होता है मोटी–मोटी किताबों में दबा हुआ अधूरे कानून का ड्रामा और सच को झूठ साबित करने और झूठ को सच का कामयाबी का मेडल देने की फर्राटा दौड़। बस मुझे अब और नहीं कहना है। काल के लेबादों में छुपे हुए खेल को दिखाने की जरूरत नहीं है, मैं ही अपने लिए सज़ा का ऐलान करता हूँ–सज़ा–ये–मौत"

इतना कहकर उसने बड़ा ही जो़र का भयानक क़ैकहा लगाया जो दीवारों से टकरा–टकरा कर फैलता ही चला गया। ऐसा मालूम हो रहा था जैसे सभी की ऑखें पत्थर की हो गई हो, दिमाग वजनी क़ैकहे के नीचे पिस गया हो, हाथ पैर हिलना भूल गये हो। इनसाफ की तराजू टूट कर गिर पड़ी हों।

अंधेरा

आँखों से जो है टपका
वही बूंद हूँ मैं
राहों में जो भटकता रहा,
सकूं-ए-दिल तलाशता रहा
दूर तक निहारता रहा,
कहाँ है तू पुकारता रहा
थककर निराश होता हुआ,
जुल्मों सितम को ढोता हुआ
दुनिया के रस्मों से जकड़ा हुआ
कहीं तो हूँ मैं
आँखों से जो है टपका
वहीं बूंद हूँ मैं
अपने ही गम में डूबा हुआ
वीरानियों में छुपता रहा
अन्दर ही अन्दर में घुटता रहा
दर्दे दिल लहू को पीता रहा
मिट मिट के हर पल मैं जीता रहा
जख्मे दिल अपना मैं सीता रहा
अपनी ही दुनिया में खोता हुआ
कहीं तो हूँ मैं
आँखों से जो है टपका
वहीं बूंद हूँ मैं।

अशोक गुप्ता

पड़ोसियों से टुटता रिश्ता

आजकल 'अच्छे पड़ोसी' नाम की प्रजाति विलुप्त होने के कगार पर है। बड़े शहरो में तो एक तबका तो ऐसा भी है जो अपने पड़ोस के फ्लैट में रहने वालों के बारें में कुछ जानता ही नहीं। जो जानते भी हैं, उनकी राय पड़ोसियों के बारे में अच्छी नहीं है।

अभी हाल में एक सर्वेक्षण से पता चला कि तीन सौ लोगों में सिर्फ दो प्रतिशत लोगों को अपने पड़ोसी पंसद थे। बाकियों ने उन्हें चुगलखोर, गप्पी, तांक–झाक करने वाले, शोर मचाने वाले, परपीड़क और भी न जाने किन–किन खिताबों से नवाजा। हम चाहें तो अच्छे पड़ोसी बनकर दूसरों को अविश्वास से मुक्ति दिलाकर उन्हें खुशी दे सकते है और खुद भी दुःस्वप्नों से बचे रह सकते हैं। प्रसन्नता और सुरक्षा के लिए अच्छे पड़ोस का होना बहुत जरूरी है। आप इन सुझावों पर गौर कीजिए, उन्हें खुद पर आजमा कर देखिए, आपको अपने पड़ोसी का मिजाज और नजरिया बदलता हुआ दिखाई देगा।

इंतजार मत कीजिए कि पड़ोसी आपसे संबंध बनाने की पहल करें। आप उन्हें देखकर मुस्कराइए, गर्मजोशी से मिलिए और उन्हें सम्मान दीजिए। उन्हें भरोसा दिलाइए कि आप किसी भी वक्त उनकी मदद के लिए तैयार हैं। सामाजिक अवसरों और त्योहारों पर उनके यहां जरूर जाइए। आप जैसा व्यवहार करेंगे, बदले में वे भी आप से वैसे ही पेश आएंगे।

अपने पड़ोसी के घरेलू और व्यापारिक मामलों में बिल्कुल दखल मत दीजिए ये पूरी तरह उनके आंतरिक और व्यक्तिगत मामले हैं। किसी की भी निजता और व्यक्तिगत स्वतंत्राता का अतिक्रमण संबंधों में जहर का काम करता है। यह जानने की बिल्कुल कोशिश मत कीजिए कि पड़ोसी के घर आज क्या पक रहा है।

सर्वेक्षणोंमेंएक बात खुलकर सामनेआयी हैकि लगभग तीन सौ लोगोंमेंसिर्फ दो प्रतिशत कोअपनेपड़ोसी पंसद थे। बाकी सबने पड़ोसियों को चुगलखोर, गप्पी, तांक–झांक करनेवाले शोर मचानेवाले परपीड़क जैसेलफ्जोंसेनवाज़ा।

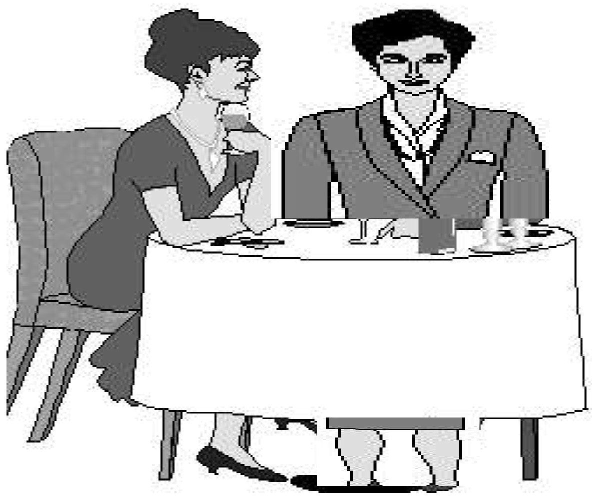

पड़ोसियों से आप फिल्मों, छुट्टियों, घूमने की जगहों, खेलों और शहर में लगी सेल पर खूब बातें कीजिए। लेकिन धर्म, जाति, राजनीति और व्यक्तिगत मसलों पर बतियाने से जरा बचिए। इनको छूने से विवाद पैदा होते हैं। अगर आप वाकपटु और खुशमिजाज हैं तो जल्दी ही अपने पड़ोसी की जरूरत बन जाएंगी। हर कोई हंसना और खुश रहना चाहता है। आजकल लोग हंसना भूल रहे है, ऐसे में आप अपने पड़ोसी को हंसाइए।

अपनी ही मत कहते जाइए, पड़ोसी की सुनिए भी। अच्छे श्रोता बनिए। अगर कोई आपसे कुछ कहना चाह रहा है लेकिन आप ठंडे और तटस्थ बने रहें तो वह आहत और अपमानित महसूस करता है। दुनिया जानती है कि हम हिदुस्तानी बहुत बोलते है, लेकिन दूसरों की सुनने का धीरज हममें बहुत कम होता है। जब भी आप किसी को ध्यान से सुनती है तो आप उसके लिए महत्वपूर्ण हो जाती है। याद रखिए।

पड़ोसियों के साथ 'गासिप' में कभी मत शामिल होइए। किसी की पीठ के पीछे निंदा करना ज्यादातर लोगों का शगल होता है। वे परनिंदा में रस लेते है और खुले दिल से सबको इस काम में आमत्रित करते है। याद रखिए जो दूसरों की निंदा आपके सामने कर रहा है, वह आपकी भी निंदा कहीं न कहीं जरूर करेगा। आपकी कहीं बातों को तोड–मरोड़ कर सनसनी खेज अंदाज में पेश करेगा। नतीजा यह होगा कि आपके प्रति कई लोगों में वेबजह तल्खी पलने लगेगी। लिहाजा इससे बचिए।

पड़ोसी की सम्पन्नता और समृद्धि से जलिए नहीं। इससे पड़ोसी का तो कुछ नहीं बिगड़ेगा लेकिन आपको काफी मानसिक संताप से गुजरना पड़ेगा। अपने जीवन स्तर की तुलना पड़ोसी के जीवन स्तर से कतई मत कीजिए। इससे कोई समस्या हल नहीं होगी बल्कि आपकी तकलीफों हर दिन बढ़ती जाएगी। ईर्ष्या आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुंचाती है और आपके भीतर

आपराधिक प्रवृत्तियॉ भी पैदा कर सकती है।

पड़ोसियों से आपके ताल्लुक कितने भी अच्छे क्यों न हो आप रात आठ बजे के बाद उनके घर जाकर व्यवधान न पैदा कीजिए। दिन भर के काम के थके लोग इस समय आराम कर रहे होते, उन्हें निजता में हस्तक्षेप महसूस होता है। आप उन्हें भी इस वक्त अपने घर मत आमंत्रित कीजिए। हां अगर कोई असमान्य परिस्थिति हो, जैसे पड़ोस में कोई बीमार है, किसी को अस्पताल पहुचाना है, किसी की मृत्यु हो गई है। तब पड़ोसियों के साथ ज्यादा से ज्यादा समय रहने की कोशिश और उनकी हर संभव मदद कीजिए।

अंततः उधार लेने की आदत और अच्छे पड़ोसी दोनों में से किसी एक को चुनना ही पड़ता हैं। भले ही आप तंगी में हों अपने पड़ोसी से कभी पैसे या कोई घरेलू समान उधार मत लीजिए। अक्सर ऐसा होता है कि लोग चाहते हुए भी समय पर उधार चुकता नहीं कर पाते, पड़ोसी तगादा करते हैं और अप्रिय स्थिति पैदा हो ही जाती है। इधर आप उधार वापस करने में देर करते हैं, उधर पड़ोसी के दिमाग में आपकी छवि एक 'बेईमान' और दगाबाज की बनने लगती है।

पड़ोसी जब तक मांगे नहीं आप उन्हें कोई सलाह न दें। वे गहरे संकट में फंसे हो तब भी नहीं। बिन मांगी सलाहें अक्सर बेकार जाती हैं और मतभेद पैदा करती है। अगर आपको पड़ोसी से आपके अच्छे संबंध है तो मुश्किल वक्त में खुद ही आकर आपसे मशविरा करेगा। ऐसे में उसकी पूरी मदद करें।

नवधनिक परिवारों की ऐसी महिलाएं जिनके पास बहुत खाली समय होता है खतरनाक पड़ोसी होती है। वे अपनी बोरियत मिटाने और मनोरंजन के लिए अगल–बगल के घरों में मतभेद पैदा कर झगड़े कराती रहती है। वे सास–बहू, ननद–भाभी या पति–पत्नी के बीच भी दोस्ती और भलमनसाहत की ओट में मतभेद पैदा कर देती हैं फिर झगड़ों का मजा लेती हैं। ऐसी पड़ोसिनों से खास तौर पर सावधान रहिए जिनकी ज्यादा दिलचस्पी अपने घर के बजाय अगल–बगल के घरों में हो।

M-Tech

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

बच्चों के लिए विन्टर कोर्स प्रारम्भ है।

इग्नू द्वारा संचालित :

एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,

डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः ओ लेवल, ए लेवल

एम.सी.आर.पी. विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा संचालित : पीजीडीसीए, डीसीए एवं **अन्य कोर्सेस** : टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट

कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क,विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस

सम्पर्क करे:

0 एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर,

कौशाम्बी रोड, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

शाखाः एल.आई.जी 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

संघर्ष

✍ प्रमिला श्रीवास्तव 'ज्योति'

अंधेरे में चली जा रही थी!
वो दिशा विहीन
तभी,
एक पत्ता खटका,
उसका ध्यान अटका
सोचा!
ये है कोई जरूर
परिस्थितियों से मजबूर
वो भी थी एक बेचारी
परिस्थितियों की मारी
देखने में प्यारी
मगर भोली–भाली
फटे कपड़े उसके तन में
सुन्दरता उसके मन में
वो थी, चुपचाप
अन्तरात्मा बोली अपने आप
तुम कौन हो?
क्यों मौन हो?
बस!
हुआ उसका मौन भंग
रह गई वो दंग
सुनी करूण गाथा
पकड़ लिया माथा
नहीं! नही!
तुम चलो मेरे संग
तुम्हारा क्या नाम
और;
मैं हूँ बेकाम
किन्तु
मैं तैयार चलने में सहर्ष
तो सुनो;
मैं हूँ संघर्ष

कहानी

"कसम खद्दर की"

अभिनव ओझा

बहरहाल, सभासद के वे चंद साल यादगार थे। अब मेरी नजरें उठीं एम.एल.ए की सीट पर। रास्ता कठिन था लेकिन असंभव नहीं। इधर मेरी एक पत्रिका की महिला संपादिका से गहरी छनने लगी थी।

इसे आप मुख्तसर में मेरी आत्मकथा भी कह सकते है। अब आप कहेंगे कि मुझ जैसे आदमी, जो पिछले कई साल से मंत्री पद को सुशोभित कर रहा है, की आत्मकथा तो बड़े तोप अंदाज में पेश की जानी चाहिये। जी हॉ, बिल्कुल बज़ा फरमाते है आप। मैं भी जानता हूँ कि नेताओं की आत्मकथायें आमतौर पर कैसे लिखी जाती हैं। करना क्या है? एक नामीगिरामी लेखका को भाड़े पर तय कर लो और अपने नाम से अपनी जीवनी लिखवा डालो। प्रकाशक का तो बाप भी छापेगा, अगर उसे अपना प्रकाशन चलाना है तो। क्या कहा आपने? किताब बिकेगी कैसे? अरे भई अजीब अहमक हैं आप भी। बिक्री की क्या चिन्ता। साहब, इतनी अक्ल तो मैं भी रखता हूँ कि मॅहगाई और अभाव की मारी अस्सी फ़ीसदी जनता रोटी का जुगाड़ करेगी या किताब पढ़ेगी? अपनी किताब सरकारी पुस्तकालयों में लगवा दो। पैसा मंत्रालय देगा कसम खद्दर की। हो गया न समाधान?

इसके बावजूद मैं अभी अपनी आत्मकथा लिखने के पक्ष में नहीं हूँ। कारण? अरे जनाब, पहले मुझे कम से कम मुख्यमंत्री तो बन जाने दीजिये। अब आप पूछेंगे क्यों नेताजी, मंत्री बनना क्या कम बड़ी बात है जो आप मुख्यमंत्री बनने का ख्वाब देख रहे हैं? तो इसके जवाब में मैं यही कह सकता हूँ कि काश आप सत्ता का नशा समझते। सियासी पावर का नशा मॅहगी से मॅहगी शराब के नशे से भी मतवाला होता है। दूर क्यों जा रहे हैं, मुझी को लीजिये। मुझे रोज रात को खाने से पहले एक बड़ा पैग शैम्पेन तो चाहिये ही चाहिये। हॉ यह बात अलग है कि शैम्पेन उपलब्ध न होने के सूरत में अरिस्टोक्रैट या मेकडोवेल से भी कम चल सकता है, लेकिन इसमें वो मजा कहाँ? क्या कहा? आपको मेरे मदिरापान की बात सुनकर ताज्जुब हो रहा है? भई इसमें चकित होने की क्या बात है? अगर सोमरस का सेवन न करूँ तो चिकन बिरयानी और मुर्ग मुसल्लम हज़म कैसे होंगे? और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जब मैं दौरे पर होता हूँ या और किसी वजह से जब मुझे शाकाहारी भोजन करना पड़ता है, तो सच्चे गॉधीवादी की तरह सिर्फ फ्रूट जूस अथवा सूप से ही काम चला लेता हूँ कसम खद्दर की। देखिये, मैं मुख्य मुद्दे से भटक रहा हूँ। आपने मुझे टोका क्यों नहीं? खैर, मैं कह रहा था कि पावर का नशा मॅहगी से मॅहगी शराब के नशे से भी मतवाला होता है। इकतीस साल पहले मुझे भी इस मदहोश कर देने वाले नशे का चस्का लगा था। उससे पहले भी मेरी ख्याति ग्राम प्रधान कें दबंग लड़के के रूप में फैल चुकी थी। बिना दो चार को पीटे मुझे नींद न आती थी। छुरा दिखा–दिखा कर और रूपये फेंक कर किसी तरह इण्टर तो पास हो गया पर उसके बाद पढ़ाई से उचाट सा हो गया। उस दौर में ठर्रे के नशे में मुझसे एक रंगीन कॉड हो गया। भई जवानी दीवानी तो होती ही है। लेकिन उन दिनों पिछड़ी जातियॉ वास्तव में पिछड़ी ही होती थी। आजकल तो खैर वे सरकार की चश्मोचराग़ है। हॉ, तो उस काण्ड को तो मेरे बाप ने थानेदार की बीबी के लिए चॉदी के कड़े बनवाकर दबा दिया, लेकिन मेरे हौसले बुलन्द हो गये। बस फिर क्या था? दनादन एक गिरोह संगठित हुआ मेरी लीडरशिप में। ज़रा गौर करियेगा, लीडरशिप के गुण मुझमें उसी समय पनपने शुरू हो गये थे। फिर शुरू हुआ वसूली का सिलसिला। व्यापारियों से, ट्रक और बस वालों से, खुफिया शराब का धंधा करने वालों से और दुकानदारों से जो आमदनी होती, वे हम लोगों की अय्याशी के लिए पर्याप्त थी।

कुछ दिन इसी धमाचौकड़ी में बीते कि मेरे बाप के पेट में खलबली मची, मेरी शादी की फिक्र में। दौलत थी ही, खेतीबारी थी और नगर में अच्छा खासा नाम भी हो गया था हम लोगों का। कमी किस बात की थी? फौरन एक विधायक फॉसा गया। उसकी लड़की थी तो काली और भद्दी, लेकिन दो लाख कैश ने उसके सौन्दर्य में चार चॉद लगा दिये। शादी से सबसे बड़ा फायदा मुझे यह हुआ कि ससुरजी क अथक् परिश्रम और मेरे गिरोह के उत्पात से मैं सभासद का चुनाव जीत गया। यह मेरी पहली सीढ़ी थी कसम खद्दर की। सभासद बनने के बाद मुझे अपनी सुरक्षा की चिन्ता हुई, लिहाजा जो मेरे सबसे गहरे मित्र और हमराज़ थे, उन्हें जेल भिजवाना पड़ा। दो एक के हाथ पॉव तुड़वाने पड़े। ऐसा करते मैं खून के ऑसू रोया। पर जनसेवा और देश प्रेम की खातिर मैंने यह कुर्बानी भी दी। अब देखिये न, उन दिनों की याद करके मेरी ऑखें छलकने ही वाली हैं लेकिन नहीं, मैं नही रोऊँगा। त्याग किये बिना कुछ नहीं मिलता कसम खद्दर की।

बहरहाल, सभासद के वे चंद साल यादगार थे। अब मेरी नजरें उठीं एम.एल.ए की सीट पर। रास्ता कठिन था लेकिन असंभव नहीं। इधर मेरी एक पत्रिका की महिला संपादिका से गहरी छनने लगी थी। लोग उसे पीठ पीछे मेरी रखैल कहते। चलो यही सही, इसमें गलत भी क्या है? मेरा तो विचार है कि अगर आदमी की औकात हो और मामला आपसी रज़ामंदी का हो, तो एक दो क्या दस रखैलें रखी जा सकती है। मेरी मिसाल सामने है। घर वालों को निहायत सुख और आराम से रखता हूँ। उन्हें कोई कमी नहीं होने देता, बस ठीक है। घर के बाहर मेरी जिन्दगी मुल्क और कौम के लिए है। मैं किसी का उद्धार करूँ, परिवार को इससे क्या? क्या पूछा आपने, जिगरा? अरे मेरी हिम्मत और जिगरे की बस न ही पूछिये। आखिर स्वर्ण भस्म और शिलाजीत कब काम आयेंगे?

तो साहब मैं कह रहा था कि मेरी नजर जी एम.एल.ए की कुर्सी पर। चुनाव निकट थे। गर्मी में मेरा दिमाग कम नहीं करता, लिहाजा मैंने नैनीताल का टूर मार दिया। और मैं सिर्फ घूमने

थोड़े ही गया था। उसी समय बरेली के आगे एक भीषण रेल दुर्घटना हुई थी। इसी बहाने वहाँ संवेदना दौरा भी हो गया। एक पंथ दो काज। एक हफ्ते के ठंडे अवकाश के बाद जब मैं लौटा तो तरोताजा था। तरकीबों की खान खुल गई। नये—नये आइडिया आने लगे। सर्वप्रथम तो मैंने अपनी उस संपादिका मित्र को पार्टी अध्यक्ष के पास एक रात का मेहमान बनाकर भेज दिया। जी तो नहीं चाहा लेकिन उस ज़ालिम ने शर्त ही ऐसी रखी थी। मरता क्या न करता? हॉ इस बात का संतोष तो था ही कि चुनाव जीतने पर उस मित्र को बैंक लोन दिलवा दूँगा। पत्रिका घाटे में चल रही थी और मालिक मेरी मित्र के पति ही थे। चलो उनका भी एहसान क्यों सिर पर रहे कसम खद्दर की। अध्यक्ष महोदय का साला एक नम्बर का निकम्मा था। मेरे बड़े लड़के के ससुर विकास प्राधिकरण में थे। कहने की देर थी, तीन लाख का ठेका आनन फानन में अध्यक्ष जी के साले को मिल गया। अध्यक्ष महोदय बाग—बाग हो गये और फौरन मेरे नाम का टिकट कट गया। मेरी तो बॉछे खिल गई। पॉचों उँगलियॉ घी में और सिर कढ़ाही में।

लेकिन फिर सोचा, खाली टिकट मिलने से क्या होगा भइया, वोट भी तो चाहिये। दिमाग पर जोर डाला। दिमाग अगर खुला तो तो हजार रास्ते निकल आते हैं। मेरे क्षेत्र में एक हरिजन बस्ती है। उस बस्ती में लगभग सारे वोट एक हरिजन प्रत्याशी को मिलना तय था। आव देखा न ताव, मैंने फौरन एक शिक्षित और सभ्य हरिजन लड़के को अपना दामाद बना लिया। मेरी लड़की मंद बुद्धि थी। और न जाने क्यों उसे मिरगी के दौरे भी पड़ते थे। उसकी तरफ से प्रतिरोध का कोई सवाल ही नहीं था। फिर तो जयजय कार देखने लायक थी कसम खद्दकर की। मेरे इस निर्णय को समाज सुधार की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम बताया गया। मोटी सुर्खियों से अखबार रंग गये। रातोंरात उस बस्ती का एक—एक वोट मेरे दामन में खिंचा चला आया।

लेकिन अभी और इलाके थे। विकास कार्य कुछ हुआ नहीं था। करता भी कौन है? मैंने अपना पर्स टटोला। पार्टी फन्ड से जो स्वीकृत होता है, वह तो कार्यकर्ताओं की सब्जी पूड़ी और चाय पान में ही खर्च हो जाता है। मेरी जमा पूँजी आज काम आयी। फौरन साइकिल, कम्बल और लालटेन बॅटने लगी। पद यात्रायें कीं और भूख हड़ताल पर बैठा सरकार के विरूद्ध। यह तो कहो कि आमरण अनशन के दिनों में रोज रात को दो सौ ग्राम काजू और दो—दो गिलास अंगूर और सेब का रस पीता रहा, वरना इस कम्बख्त हड़ताल ने तो मेरी जान ही ले ली होती कसम खद्दर की।

कई युक्तियॉ भिड़ाई, बेशुमार तीर छोड़े और हर तरफ हाथ पैर पटके। मंदिर में बकरे का गोश्त फिंकवाया और दंगा शुरू होने पर राहत कार्य किया। मज़ार की चहारदीवारी तुड़वाई और टेन्शन उठने पर लम्बे—लम्बें मार्मिक भाषण दिये। यही नहीं, अपने पैसे से नई चहारदीवारी और गेट भी बनवाया। अरे उसके बाद मेरा वो रंग जमा, ऐसी लोकप्रियता बढ़ी कि पूछो मत। मैं तो मस्त हो गया राजा। सारी तैयारी चकाचक हो गई कसम खद्दर की।

चुनाव हुए, और मेरी सफलता का एक नया दौर शुरू हुआ। विधायक बनने पर जो सुख प्राप्त हुआ उसने सारी तकलीफों और चिंताओ का अंत कर दिया। बाप बूढ़े हो चले थे, रतौंधी भी हो गई थी। अपने बहनोई के नाम डालडा की एजेंसी करवा दी। हिसाब बाप देखते हैं और कामकाज बहनोई। बड़ा बेटा अपनी फैक्ट्री लगाना चाहता था। मैंने कहा ठीक है भाई, तुम्हारी ईच्छा भी तो आखिर मुझी को पूरी करनी है। ज़मीन अपनी थी ही, लोन फाइनेन्स कॉरपोरेशन मंजूर कर देगा। वहॉ के एक क्लास वन ऑफिसर का भतीजा पिछले साल इन्कम टैक्स के झमेले में फॅस गया था। मैंने ही मामला रफ़ादफ़ा कराया। वह पाजी किस दिन काम आयेगा? क्या पूछा आपने? छोटा लड़का क्या करता है? अजी जनाब बस मेरी यही दुखती रग है। मैं तो उससे तंग आ चुका हूँ। मेरा नाम से अनाप शनाप कमाई करता रहता है। ट्रॉसफर, नियुक्ति, कोटा,ठेका, परमिट और इसी तरह दसियों और तरीकों से नोट बटोर रहा हैं। माना नोट कमा रहा है तो अच्छा ही कर रहा है, फिर भी कुछ तो मेरी पोज़ीशन और मरतबे का भी ख्याल करना चाहिये। मगर वो तो मेरी नसीहतों को धुएँ के छल्ले की तरह उड़ा देता हैं। बहुत बदमाश है। लोग कहते हैं बिल्कुल मुझ पर गया है। पर मैं भी आखिर उसका बाप हूँ कसम खद्दर की। सोचता हूँ मेरे बाद वही मेरा वारिस हो। उसे पॉलिटिक्स में ही भेजूँगा। घर ही पूँजी घर ही में रहनी चाहिये न। वह राजनीति के लिये हर तरह से उपयुक्त है। लफॅगा कहीं का।

क्या पूछ रहे हैं आप? मैं मंत्री कैसे बना? इसका उत्तर मैं नहीं दे सकूँगा, क्योंकि अभी मुझे राजनीति में कई बरस रहना है। छप्पन साल की उम्र भला होती ही क्या है? अगर मैं अपने मंत्री बनने की प्रक्रिया आपको बता दूँ कई बगला भगत और सफेदपोश बेनक़ाब हो जायेंगें। पार्टी का भविष्य अंधकारमय हो जायेगा। और पार्टी का भविष्य जाये भाड़ में, मेरी जान तो खतरे में पड़ ही जायेगी न? इसीलिये खामोश रहना ही अच्छा है कसम खद्दर की।

अच्छा अब आज्ञा दीजिये। आपके साथ बातें करने में काफी समय निकल गया। क्या करूँ, मेरा तो एक—एक पल कीमती है। क्या कहा आपने, कुछ देर और रूक जाऊँ? मुमकिन ही नहीं है जनाब। आपका आग्रह मैं कभी न टालता लेकिन बात यह है कि अब से थोड़ी देर बाद मेरे एक पुराने परिचित रसिक दलाल आने वाले हैं। आप शायद उन्हें न जानते होंगे। दरअसल उनका उठना बैठना हाई सर्किल में होता है। अट्ठारह साल की बाला को लेकर आ रहे है। पता नहीं कहॉ—कहॉ से ऐसे नायाब नगीने ढूँढ़ लाते हैं। खैर वही जानें, धंधे की बात है। मुझसे नग़द नहीं लेते, सिर्फ राइफल के एकाध लाइसेंस बना दूँगा। अपना हिसाब बराबर।

अच्छा जी नमस्कार। बस यही दुआ कीजिये कि जल्द से जल्द मेरा छोटा लड़का भी पॉलिटिक्स में अपना मुकाम बना ले और मेरी तरह वह भी अपना जीवन जनसेवा और लोक कल्याण को समर्पित कर दे कसम खद्दर की।

माह अप्रैल एवं मई के व्रत, त्योहार एवं साईत

● **पं० शम्भू नाथ मिश्रा**

श्री गणेशाय नमः,नववर्ष आप सभी पाठकों को मंगलमय हो। इस वर्ष संवत् 2060 में दुर्मुख नाम संवतसर रहेगा।

2 अप्रैल, नवरात्रि आरम्भ हो रही है। अतः नवरात्रि के अवसर पर कलश स्थापना मन्त्रा नीचे दिया गया है।

संकल्पमन्त्राः हरिः ओऽम् विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतों महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया, पर्वतमासस्य, अद्य श्री ब्रहमनणो द्वितीये पदार्थे श्री श्वेतवादाहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, भूर्लोके, जम्बू द्विपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्तैक देशान्तर्गते, श्री 'दुर्मुख' नाम सम्वतसरे, 'देवत्या' नक्षत्रो, चन्द्र संवतसरे, वासन्तनवरात्रि रम्भे, प्रयाग क्षेत्रो, तदुपरि 'अमुक' क्षेत्रो मासानाम् मासोत्तमे मासे चैत्रा मासे, शुभे शुक्ल पक्षे, प्रतिपदायाम्, तिथौ, 'बुध' वासरे 'अमुक' गोत्रोत्पनोहम्, 'अमुक' नामाऽहं, सत्प्रवृति सम्बर्धनाय, दुष्प्रवृति उन्मुलनाय, लोककल्याणाय, आत्मकल्याणाय, वातावरणपरिष्काराय, उज्जवल भविष्य कामना, पुर्तयें च प्रवल पुरूषार्थ करिष्ये अपरन्च मनवान्छित फल प्राप्तर्थ्यम्, अस्मैः प्रयोजनाय् च कलशादि आवाहित देवता पूजन पूर्वकम्.......'अमुक' कर्म सम्पादनार्थम् संङक्ल्प अहम् करिष्ये।"

2 अप्रैल, बुद्धवारः –पंचक समाप्ति रात्रि 12.13 बजे। नवरात्रि आरम्भ–कलश स्थापना।

9 अप्रैल, सप्तमी, बुद्धवारः भद्रा दिन 11.28 से रात्रि 12.35 तक।

10 अप्रैल, अष्टमी, गुरूवारः महानिशां पूजा। दुर्गा अष्टमी व्रतम्।

11 अप्रैल नवमी, शुक्रवारः श्रीराम नवमी व्रतम्। श्रीराम जन्म। श्री दुर्गा नवमी व्रतम्। नवरात्रि व्रत का पारण दिन 11.25 के बाद।

13 अप्रैल,रविवारः भद्रा दिन 9.29 तक। कामदा एकादशी व्रत सर्वेषाम्।

14 अप्रैल, द्वादसी,सोमवारः सोम प्रदोष व्रतम्। मेष संक्रान्ति खरमास समाप्ति। वैसाखी।

16 अप्रैल, पूर्णिमा, बुद्धवारः स्नानदान व्रतादै पूर्णिमा। वैसाख स्नान दान व्रत नियमादि आरम्भ।

17 अप्रैल गुरूवारः वैसाख मास आरम्भ।

19 अप्रैल शनिवारः संकष्ठी श्री गणेश चतुर्थी व्रतम्। चन्द्रोचतुदशी/पूर्णिमा, भद्रा सुबह 6.35 से सायं 6 बजे तक। स्नानदान व्रतादौ पुर्णिमा।

20 अप्रैल रविवारः सवार्थ सिद्धियोग दिन 2.17 से।

24 अप्रैल गुरूवारः श्री शीतलाष्टमी व्रत।

25 अप्रैल शुक्रवारः पंचक प्रारम्भ दिन 12.20 से।

27 अप्रैल रविवारः वरूथिनी एकादशी व्रत।

28 अप्रैल सोमवारः प्रदोष व्रत।

30 अप्रैल बुद्धवारः पंचक समाप्ति प्रातः 7.30 बजे।

मई

1 मई गुरूवारः स्नानदान अमावस्या। सर्वाथसिद्धियोग 10.3 तक।

2 मई शुक्रवारः सर्वाथसिद्धयोग 12.41तक।

4 मई रविवारः सभी कार्यो के लिए शुभ।

5 मई सोमवारः भद्रादि 10.55 से रात्रि 11.31 तक। वैनायिकी श्री गणेशचतुर्थी व्रत। सर्वाथसिद्धियोग रात्रि 723 तक।

8 मई गुरूवारः भद्रा रात्रि 12.13 से। श्रीगंगा सप्तमी। सर्वाथसिद्धियोग व अमृत सिद्धियोग रात्रि 10.14 तक। सभी कार्यो के लिए महाशुभ।

12 मई सोमवारःमोहनी एकादशी व्रत।

13 मई मंगलवारः भौम प्रदोश व्रतम।

15 मई गुरूवारः व्रत की पूर्णिमा।

16 मई शुक्रवारः स्नानदान पूर्णिमा।

18 मई रविवारः भद्रा दिन 3.35 से रात्रि 2.24 तक। सर्वाथसिद्धियोग दिन 10.27।

19 मई सोमवारः संकष्ठी श्री गणेश चतुर्थी व्रतम।

22 मई गुरूवारः पंचक आरम्भ रात्रि 8. 6 बजे से।

23 मई शुक्रवारः श्री शीतलाष्टमी।

26 मई सोमवारः अचला एकादशी व्रत।

27 मई मंगलवारः पंचक समाप्ति दिन 2.51 बजे।

28 मई बुद्धवारः प्रदोष 13 व्रतम। वट सावित्री व्रतारम्भ 3 दिनों तक।

30 मई शुक्रवारः वट सावित्री व्रत।

31 मई शनिवारः स्नानदान अमावस्या। सर्वाथसिद्धयोग अमृत सिद्धियोग 12.55 तक। सभी कार्यो में शुभ। ❍

स्थापित 1982 मान्यता प्राप्त रजिः 1030

किशोर गर्ल्स हाईस्कूल, कॉलेज

मीरा पट्टी, टी.पी. नगर, जी.टी.रोड, इलाहाबाद

कक्षाए : नर्सरी से कक्षा 12 तक

10 अप्रैल से प्रवेश प्रारम्भ

प्रधानाचार्या प्रबंधक

कु0 सविता सिंह भदौरिया वी.एन. साहू

जरा हंस दो मेरे भाय

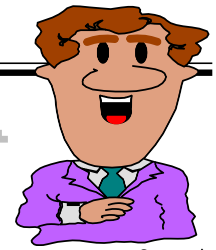

दावत में एक युवक को देखकर एक महिला बोली हाय, कितना सुन्दर है। युवक ने खुश होकर कहा–कौन, मैं? महिला– जी नहीं, आपके स्वेटर का डिजाइन।

एक युवती ने दूसरी युवती से कहा– सचमुच मर्द बेचारा होता है।
दूसरी युवती– वो कैसे?
पहली युवती–जब वह पैदा होता तो मॉं को बधाइयॉं मिलती है। जब उसकी शादी होती है तो लोग दुल्हन को देखते है और जब वह मर जाता है तो बीमा की रकम उसकी बीबी को मिलती है।

एक खुबसूरत लड़की के लिए दो रिश्ते आये। लड़की सोचने लगी कि दोनों में से किससे शादी करूँ? फिर उसने सोचा कि क्यों न मैं रिश्ते के लिए कम्प्यूटर से मालूम करूँ। उसने कम्प्यूटर से जानना चाहा कि मैं दोनों में से किससे शादी करूँ। कम्प्यूटर ने कहा कि ये दोनों तुम्हारे लिए ठीक नहीं है तो लड़की ने पूछा कि मैं किससे शादी करू। कम्प्यूटर ने जबाब दिया–क्या मैं मर गया हुँ।

एक युवक ने अपने मित्र से कहा– यार, यदि मैं किसी अमीर लड़की से शादी कर लूँ तो मेरी आर्थिग तंगी दूर हो जाए।
युवक मित्रः तो कर क्यों नहीं लेते।
मित्रः पर यार यह बात मेरी पत्नी को कौन समएझाए।

एक युवक ने अपनी पत्नी से कहा– तुम मेरी मॉं को सताती रहती हो। क्या तुम्हें उनकी एक बात भी याद नहीं है?
पत्नीः हॉं, एक बात याद है जो यह कि हमारी शादी के विरोध में थी।

पागलखाने में वार्डन राउंड पर थी उसने देखा कि एक पागल वाशबेसिन में मछली पकड़ने का कांटा लगाए बैठा है। उसने सहानुभूति से पूछा–'कोई मछली मिली क्या'? पागल ने हंस कर कहा– पागल हो क्या? बाशबेसिन में मछली कहां मिलती है।

pkSdbkn kevdfoyykbZUesa [koxkdM+kdkHkOkkse
स्टूडेन्ट्स टेलर्स, शगुन चौक की नई भेंट
लगन कलेक्शन
Raymond
मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे
सिविल लाईन्स, इलाहाबाद फोन : 2608082

नंदलाल अपने घर पंजाब लौट रहा था। स्टेशन पर टिकट लेने के लिए वह लाईन में लगा था। उसके आगे खड़े व्यक्ति ने खिड़की पर कहा–'एक पंजाब मेल देना।' उसे टिकट मिल गया। इसके बाद नंदलाल का नंबर आया। उसने कहा–'एक पंजाब मेल और एक पंजाब फीमेल'। बुकिंग क्लर्क ने हैरानी से देख कर पूछा–'पंजाब फीमेल क्या? नंदलाल ने उसे समझाते हुए कहा–साथ में मेरी पत्नी भी जा रही है न!'

एक बहादुर पलहलवान दुनिया में अपनी पत्नी के सिवा किसी से नहीं डरता था। उसे चिड़ियाघर में शेर की देखभाल की नौकरी मिली। उसकी बहादुरी के कारण शेर भी उसकी इज्जत करता था। एक रात जब शराब के ठेके पर उसे देर हो गई, तो वह घर जाने के बजाय शेर के पिजरे में आकर सो गया। सुबह उसकी पत्नी उसे ढूढने निकली, तो देखा वह पिजरे में शेर के पेट पर सिर रख कर सो रहा था। शेर भी सावधानी से लेटा था, ताकि पहलवान की नींद न खुल जाए। उसकी पत्नी ने दहाड़ कर कहा–'अच्छा यहां छिपा है। देख ली आज तेरी बहादुरी।

सड़क पर लगा एक साइनबोर्ड–उस दुनिया में 15 मिनट पहले जाने से अच्छा है, इस दुनिया में 15 में देर से पहुंचे। गति सीमाः 15 किलोमीटर प्रतिघंटा।

निरंजन आज मेरे यहां फोन लग गया है।
शर्मा जीः तब अपना नंबर दे दो।
निरंजनः अभी तो याद नहीं है। शाम को घर पर फोन करना मैं दे दूंगा।

मरता हुआ मरीजः डॉक्टर आप तो मेरे लिए भगवान से भी बड़े साबित हुए।
डॉक्टरः कैसे?
मरीजः भगवान तो सिर्फ जान लेता है। आपने मेरी जान और पैसा दोनों ले लिए।

सारे दुखो की जड़ स्वार्थ है, अतः स्वार्थ का त्याग कर दे। दुःखों का त्याग स्वयं हो जाएगा। **दाउजी**

'मेनो पाज' (रजोनिवृत्ति)

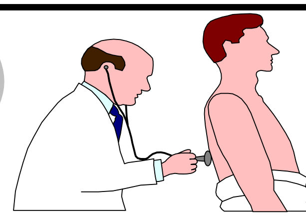

डा. कुसुमलता मिश्रा
एक्यूप्रेशर चिकित्सिका,

भारत वर्ष में रजस्वला (मासिक चक्र) कन्याओं में 9 से 14 वर्ष तक की अवस्था में शुरू होकर 40 से 45 वर्ष या 50 वर्ष तक कभी भी जा सकता है। 40 से 50 वर्ष के बीच के समय को मेनो पाज का समय कहते हैं। यह अत्यन्त संवेदन शील एवं जटिल अवस्था होती है। इस समय हार्मोनल स्राव अंसतुलित हो जाता है। फलस्वरूप शरीर में तमाम तरह की विसंगतिया उत्पन्न हो जाती है। यह वह समय है जब स्त्री में एस्ट्रोजन एवं प्रोजेस्ट्रान स्राव में कमी हो जाती है, एस्ट्रोजन स्राव समाप्त हो जाता है जिससे स्त्रियों में दाढ़ी मूंछ की समस्या शुरू हो जाती है।

ध्यान रहे पुरूष मोनोपाज भी होता है। इससे पुरूष भी उदास एवं उद्विग्न हो जाते हैं। इसकी आयु सीमा 58 से 80 तक होती है। विदेशी महिलओं की रजोनिवृति 48 से 52 वर्ष तक होती है। अतः वे अधिक चुस्त दुरूस्त होती है। भारतीय महिलायें समय से पूर्व ही रजोनिवृत्ति हो जाती है। फलतः वे समय से पूर्व बूढ़ी लगने लगती है। जिस महिला का मासिक चक्र अधिक नियमित एवं लम्बी अवधि तक होता है वे अधिक जवान व स्फूर्तिवान तथा निरोग होती है।

मोनो पाज की जटिलताः मेनोपाज की स्थिति में हार्मोनल स्राव असंतुलित होने से सिर दर्द, थकान, धड़कन बढ़ना, चिड़चिड़ापन, व्यर्थ की शंका एवं क्रोध का आ जाना, रक्त चाप में वृद्धि, जी मिचलाना, मोटापा, दिन में चेहरे में गर्मी लगना, अधिक पेशाब, हथेली तलवे यहॉ तक की शारा शरीर गर्म होना, हाथ पैर में चिटियॉ रेंगना जैसा, पसीना अधिक, रक्त स्राव होना गर्भाशय से। कभी—कभी आत्म हत्या की प्रवृत्ति रोने की इच्छा, इन्फिरिपारिटी, काम्पलेक्स, बूढ़ा महसूस करना, कभी कभी तो पूरा घर ही अनियंत्रित हो जाता है। पति बच्चें अवाक स्थिति में मॉ के परिवर्तन देखते है। कई बार तो इस स्थिति को न समझ पाने से पति पत्नि में तलाक तक की नौबत आ जाती है। अतः इस स्थिति से निबटने के लिए महिला के साथ परिवार के सहयोग की आवश्यकता है।

मोनोपाज की स्थिति में आवश्यक सुझाव एवं सावधानियॉः कई महिलाएं एस्ट्रोज हार्मोन के इंजेक्शन लेती है किंतु यह भविष्य में नुकसान देह होता हैं। सर्वप्रथम यदि 52 के बाद भी मासिक स्राव है तो चिंता का विषय है। कभी कभी ऐसी स्थिति में गर्भाशय का कैंसर या योनि का कैंसर सम्भव हो सकता है। अतः इसका भी ध्यान देना आवश्यक है। साधारण स्थिति में 45 से 50 तक ही मासिक चक्र रहता है।

1. रजोनिवृति की अवस्था में उत्तेजक पदार्थ चिकनाई वाली वस्तुएं बंद कर दें।
2. कार्बोहाड्रेड की मात्रा कम एवं प्रोटीन की मात्रा बढ़ा दे तथा हरी शाक, भाजी,दूध, दलिया एवं मोटे अनाज की रोटी खायें।
3. हल्का व्यायाम एवं टहलना नियमित सैर तनाव को दूर रखेगा एवं एस्ट्रोजन तथा प्रोजेस्ट्रॉन स्राव को संयत रखेगा। साथ ही अल्प अवधि में मेनोपाज होने से रोकेगा।
4. इस आयु में कैल्शियम की मात्रा पर विशेष ध्यान दे क्योंकि पौष्टिक तत्व की कमी इस उम्र में हो जातीहै।
5. जब तक रोग दूर न हो पति को पत्नी के साथ सहवास नहीं करना चाहिये बल्कि उसके साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
6. प्रेरणादायक पुस्तकें पढ़े, स्वयं को व्यस्त रखे। अपने शौक पूरे करें।
7. इस आयु में जब हार्मोन कम बनते हैं तो डिम्ब ग्रंन्थिया मं प्रतिमास अण्डे का पक कर निकलना बंद हो जाता है। कई बार यह क्रम बंद होकर 3 मास से 6 या तीन वर्ष यहॉ तक की पॉच वर्ष भी चलता है। जिससे महिला असंतुलित हो उठती है। उसमें आत्महत्या की प्रवृत्ति परिवार से वैराग्य। पति बच्चों से घृणा, काम काज से उदासीन हो उठती है। अतः यह अत्यन्त नाजुक समय होता है। इसमें महिलाओं को सम्हालने की आवश्यकता होती है। उसे कहीं बाहर घुमाया फिराया जाय। यदि वह क्रुध होती है तो उसे समझा बुझाकर स्थिति से रोका जा सकता है। यही वह उम्र है जब महिलायें अपने को व्यस्त रख कर शिखर पर पहुॅच सकती है। खाली रख कर खाई मं गिर सकती है।

राजेश किराना स्टोर एवं गैस सर्विस
लार रोड, देवरिया
नोट : शादी—विवाह एवं किसी भी शुभअवसर पर उचित मूल्य पर समान प्राप्त करें। फोन : 284054

मातृत्व स्त्री के लिए एक बेहतर उपहार

✍ **संघमित्रा भोई,** उड़ीसा

मां बनना अब तनावपूर्ण नहीं वरन् रोमांचकारी है। गर्भावस्था में कुछ सॉवधानियों बरत कर हमं गर्भावस्था काल में होने वाली पीड़ा से बच सकते है।

किसी ने सच ही कहा है कि मातृत्व स्त्री के लिए एक उपहार भी है और उसकी पूर्णता भी। पर इस उपहार को पाने की पीछे की बैचैनी और तनाव से उत्पन्न कई तरह विसंगतियों से भी हमारा साक्षात्कार होता है। प्रसव पीड़ा की अनुभूति मात्र ही हमेंकसमसाने लगती है। आज भी प्रसव पूर्व महिला मृत्यु दर काफी ज्यादा है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न प्रासंगिक हो जाता है कि क्या ऐसा कोई निदान है जिससे स्त्री प्रसववेदना को अनुभव न कर सके और मातृत्व के सुख से सम्पन्न हो सके। यह जानने के लिए हमने उड़ीसा के एक प्रसिद्ध अस्पताल की जानी स्त्री रोग विशेषज्ञा डॉ. वीना अग्रवाल से बातचीत की। डा. वीना का मानना है कि गर्भ में सात सप्ताह के भ्रूण का पांचो ज्ञानेन्द्रियों–कान, नाक, आंख, जीभ व त्वचा से संबंधित तंत्र विकसित हो जाता है, और वह गर्भवती के आसपास के वातावरण व गतिविधियों को महसूस कर सकता है। इस संदर्भ मेंवह अभिमन्यु की कथा को विज्ञान कथा के रूप में स्वीकार करती है।

अल्ट्रासाउंड के समय आयोडीन डालने पर बच्चा मुंह सिकोड़ता है और यदि शुगर का प्रयोग किया जाए तो बच्चा चूसता नजर आता है। यह सिद्ध करता है कि उसे स्वाद का ज्ञान हो चुका है। इसी तरह ध्वनि का प्रभाव भी बच्चे पर पड़ता है। यदि गर्भवती स्त्री शोरगुल वाले स्थान पर रहती है तो बच्चे का भार अन्य बच्चों की अपेक्षाकृत कम होता है जिससे उसके विकास पर फर्क पड़ता है।

तीसरी महत्वपूर्ण चीज है –गर्भावस्था में होने वाली सामान्य तकलीफों के बारे में जानना और उनका समाधान प्राकृतिक तरीके जैसे जी मिचलाने पर लौंग आदि से करते है। हमारी पूर्णतः कोशिश यह रहती है कि उनको कोई दवा न दी जाए।

चौथी महत्वपूर्ण चीज है–गर्भकाल में होने वाली शारीरिक और भावनात्मक परिवर्तनों के बारे में जानना। इसमें गर्भवती स्त्री को यह पूर्ण प्रयास करना चाहिए कि वह तनाव में न रहे। इसके लिए उसके पति को या अन्य परिवार के सदस्यों को भी ध्यान देना होगा।

शर्मा टेलर्स

मेन रोड, बरहज बाजार, देवरिया

सुट स्पेशलिस्ट (लेडिज एवं जेन्ट्स)

नोट : हमारे यहॉ लेडिज एवं जेन्ट्स सूट की सिलाई उचित मूल्य पर की जाती है।

एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें।

सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

स्नेहागन कला केन्द्र

एल.आई.जी. 93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

0 सिलाई 0 कढ़ाई 0 पेंटिग 0 कम्प्यूटर 0 ब्यूटिशियन 0 इंग्लिश स्पोकेन0 vU;izkQsluy dkslZsl ,oa O;olkf;d dkslZsl

नोटः हमारे यहॉ अनुभवी अध्यापको द्वारा ट्रेनिंग की व्यवस्था है।

इधर—उधर की

एक्यूपंक्चर से छूट सकती है सिगरेट

सिगरेट छोड़ने की कोशिश लोग बहुत बार करते हैं, लेकिन तीन दिन की सफलता के बाद चौथे दिन फिर पुरानी आदत की ओर लौट पड़ते है। अब नार्वे के विज्ञानियों ने बताया है कि एक्यूपंक्चर से सिगरेट की लत छूट सकती है। इसके लिए विज्ञानियों ने उन लोगों पर प्रयोग किए, जो हर दिन एक पैकेट सिगरेट पी रहे थे। एकयूपंक्चर प्रणाली के जरिए इनके शरीर में अलग-अलग स्थानों पर सुइंया चुभोई गई। इसका नतीजा यह हुआ कि लोगों ने एक दिन में १४ सिगरेट तक कम कर दी थी। इलाज के लिए ३२ फीसदी लोगो ने सिगरेट हमेशा के लिए छोड़ दी थी। ५ साल तक लगातार इन लोगों पर नजर रखने के बाद पाया गया कि इन्होनें दोबारा फिर कभी सिगरेट नहीं पी। यूनिवर्सिटी ऑफ ओस्ली में हुए इस शोध के बाद विज्ञानियों ने दावा किया है कि इससे सिगरेट छोड़ने के लिए मरीज को शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार किया जा सकता है। इन्हें एक्यूपंक्चर के साथ-साथ एक्यूप्रेशर के लिए भी प्रेरित किया गया। अमेरिका में १० लाख से भी ज्यादा लोग इस समय सिगरेअ से बचने के ए एक्यूपंक्चर का इस्तेमाल कर रहे है। यह बात जरूर है कि लोग एक बार चिकित्सा करवा कर ही निश्चित नहीं रह सकते। बीच-बीच में उन्हें डॉक्टर से संपर्क भी करना पड़ता है।

इश्क में चोट खाए लोगों का क्लब

आमतौर पर प्रेम संबंधो में और खासकर ऐसे संबंधो में, जिन्हें कोई कानूनी या सामाजिक मान्यता नहीं होती, अगर कोई बेवफाई होती है, तो उसके लिए किसी की जवाबदेही नहीं होती। महिला या पुरूष अपने तौर पर इस दुख को झेलने की कोशिश करते है। बहुत बार इस तकलीफ से वे खुद-ब-खुद बाहर निकल आते हैं और बहुत बार उन्हें डाक्टरों की मदद लेनी पड़ती है। हाल ही में यहां एक ऐसी ही महिला ने इस व्यवहार के खिलाफ आवाज उठाने कोशिश की। जिसे उसके प्रेमी ने १० साल के प्रेम संबंध के बाद ध ोखा दे दिया और चलता बना।

एना डेल नाम की इस महिला ने हाल ही उन लोगों की एक सोसायटी बनाई है, जिन्हें उनके प्रेमी या प्रेमिका ने बिना किसी कारण के छोड़ दिया। 'सोसायटी फॉर द अनरीजनली डंप' नाम की यह संस्था उन लोगो की मदद करेगी, जो इस कारण से उपेक्षित अनुभव कर रहे है।

टॉयलेट में ज्यादा देर नहीं

बैंकाक। यहॉ सरकार पर्यटक स्थलों पर लोगों के लिए ऐसे आधुनिक टॉयलेट बनाने जा रही है, जिनसे उन्हें सुविध तो होगी, लेकिन वे वहॉ जरूरत से ज्यादा समय नहीं बिता सकेगें। इनमें ऑटोमेटिक अलार्म लगे है। अगर कोई व्यक्ति अंदर ज्यादा देर तक रहता है तो अलार्म तो बजने ही लगेगा, साथ ही दरवाजे का लॉक भी अंदर से खुल जाएगा। ऐसे ७२ टॉयलेट शहर भर में लगाए जा रहे है। इन्हें सिक्का डाल कर खोलना होगा। इसीलिए अंदर से बंद के बावजूद एक खास समय के बाद ये अपने आप ही खुल भी जाएंगे। इसमें आटोमेटिक फ्लश लगे हैं। अलार्म बजने के बाद जब अंदर से कुंडा खुल जाएगा, तो बाहर खड़ा व्यक्ति भी इसे खोल सकेगा। नगरपालिका का कहना है कि इसका एक मकसद यह भी है कि अगर अंदर किसी व्यक्ति की तबीयत खराब हो जाए और वह दरवाजा न ,खोल पाए, तो वह ज्यादा देर अंदर नहीं रहेगा। ये टॉयलेट एसीसी सुपर स्पोर्ट कंपनी लगवा रही है।

सात लाख साल पहले बसे थे ब्रिटिश

पहले ब्रिटिश इतिहासकारो का मानना था कि ब्रिटेन में लोग ४५०००० से ५००००० साल पहले आकर बसे होंगे। लेकिन एक शोध से इन इतिहासकारों की धारणा पर प्रश्न चिहन लग गया है। आधुनिक इतिहासकारों का मानना है कि यहां लोग साल लाख साल पहले आकर बसे होगे। न्यू सांइटिस्ट नामक पत्रिका में छपी एक खबर में बताया गया है कि पुराने इतिहासकारों का मानना गलत था कि लोग यहां पांच लाख साल पहले आकर बसे होंगे। शोधकर्ताओं ने यहां के नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम में रखी चकमक पत्थर की कुल्हाड़ी और दूसरे औजारों के अध ारपर ही अपना निष्कर्ष निकाला। इन लोगों ने हिरण की एक हड्डी को भी अपने अध्ययन का विषय बनाया, जिस पर तेज धार वाले औजार का निशान था।

इधर—उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबरे जोआपके संज्ञान मेंहो या कोई नया आविष्कार हुआ हो तो हमें भेज सकते हैं। अच्छी खबर को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे। अच्छी खबरें के छपने पर हम आपको हजारोंरुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगें तो देर किस बात की। कलम उठाइए और लिख भेजिए हमारे पते पत्र—व्यवाहार के पते पर।

भूख

अनिता चौहान

वैंसे तो पेट पापी के वास्ते रोटी की भूख बड़ी बुरी होती है। किंतु इस पेट की भूख से भी ज्यादा खतरनाक होती है तन की भूख।

संजय उर्फ संजू व उसका मित्रा दोनों घर में बैंठे बाते कर रहे हैं।

संजू: मित्रा तूने कल किसलिए रूपये दिये थे।

मित्रा: मन्नू के घर रात को पिक्चर लगायेंगे।

संजू: कौन सी फिल्म है।

मित्राः नाम तो मुझे याद नहीं है। पर वो सीन क्या लगता है। जब हिरोइन अपने कपड़े उतारकर सिर्फ ब्रा और पैंटी में आती है तो .....। (बीच में बात रोककर) संजू तूने कभी कोई लड़की देखी है ऐसी।

संजू: देख लूगा तो क्या छोड़ दूँगा। और पिक्चर में देखने से सिर्फ आग लगती है बुझती नहीं।

मित्राः बेवकुफ, हकीकत में कोई लड़की कपड़े अपने आप नहीं निकालती। अगर किसी के उभारों को भर कस भिंचने की मस्ती लेनी है तो उसके कपड़ो को उसके तन से उतार दो फिर तो वो चाह कर भी आपके हाथों से दूर नहीं जा सकती। तभी बाहर से तेज आवाज में बोलने की आवाज आती हैं– "संजू बेटा बैठा ही रहेगा या कुछ काम भी करेगा। बातों से पेट नहीं भरता। अरे कुछ काम कर। कम से कम साग सब्जी ही लाकर रख दे।"

संजयः चिल्ला मत! जा रहा हूँ। पैसे निकाल कर रख देना।

मित्राः अच्छा तू बाजार जा। मैं भी चलता हूँ। आना रात को।

संजू: ठीक है देखूंगा।

संजू बाजार से समान लेकर आता है। समान ले जाने के लिए जिस लड़की को आवाज देता है उसकी उम्र शायद 17 और 18 के बीच ही हैं। रंग गोरा, नैन नक्श सुन्दर है। मासूमियत जवानी के दहलीज पर आये, तो मंजूला की तरह दिखती है।

संजू: मंजू, समान और सब्जियॉ ले जा। वह जोर से आवाज देता है। आवाज सुनकर मंजू दौड़ती हुई आती है।

वैसे तो पेट पापी के वास्ते रोटी की भूख बड़ी बुरी होती है। किंतु इस पेट की भूख से भी ज्यादा खतरनाक होती है तन की भूख।

मंजू: लाओं भईया, जल्दी साईकिल से निकालों निकाला भी नहीं है। एक तो वैसे ही देर से आये हैं।

संजू ओर मंजू साईकिल से थैला निकालते है। थैला निकालते वक्त गिर जाता है मंजू मुँह बनाते हुए कहती है–ओफो.. काम पर काम बढ़ाना आता है आपको तो। इतना कहकर मंजू जमीन पर बिखरे आलूओं को उठाने लगती है।

संजू की नजर मंजू की छाती पर पड़ती है। संजू मंजू की काले रंग की ब्रा पर ऑखें गड़ा देता है। मंजू समान लेकर रसोई घर की तरफ चली जाती है।

रात को खाने के बाद सब अपने अपने बिस्तर की तरफ सोने के लिए बढ़ने लगते हैं। तब संजू कहता है– मैं मन्नू के यहॉ जा रहा हूँ।

मॉ बिना कोई सवाल किये जाने की इजाजत दे देती है।

संजू सारी रात मन्नू के घर फिल्में देखता है। सुबह जब घर आता है तो नींद के कारण ऑखें फूल रही होती है।

मंजू: भईया, चाय पियंगे? चाय लेकर आउ?

संजू: नहीं, अभी नहीं। अभी मुझे नीद आ रही है, मैं सोने जा रहा हुँ। जब जागूगा तो बना देना। इतना कह कर संजू सोने चला जाता है।

मॉ तो खेत और भैसों के काम में लग जाती है। घर का सारा काम मंजू के जिम्मे रहता है। मंजू ने गॉव की पाठशाला से आठवी तक पढ़ाई की आगे मॉ ने पढ़ाया नहीं, आखिर किसान की बेटी है। इतना ही काफी है।

संजू का दिल पढ़ाई से उब चुका है। उसे घूमना फिरना और अपने दोस्तों के साथ गप्पे लड़ाना यही सब अच्छा लगता है। संजू के इस व्यवहार के कारण माता–पिता काफी नाराज रहते है। लेकिन संजू तो अपनी मॉ का लाडला और इकलौता बेटा है।

अगर खेत का काम अधिक भी हो तो मंजू को डाट कर खेती में काम करवाया जाता लेकिन संजू मन का मालिक है।

दिन के तीन बज गये हैं। संजू अभी सोते से जगा है। संजू की मॉ, बहिन दोनों घर के काम में लगी थी तभी संजू आवाज देता है– 'मंजू, चाय बना।

मॉ–चाय का ये कौन सा समय है। खाट से उठ, हाथ मुँह धोकर बरोसी से दूध ले ले।

संजू: नहीं, मुझे दूध नहीं पीना तू चाय बना।

मॉ: मंजू बेटा रख दे थोड़ा सा पानी। ये मानने वाला थोड़ी है।

मंजू, संजू को चाय बनाकर देती है। फिर रात का खाना चारो एक साथ खाते है। मंजू रसोई का काम खत्म करके सभी के बिस्तर लगान पहुँचती है। अप्रैल का महीना है। इस कारण पूरा परिवार आगन में सोता है। अधियारी रात होने के कारण मंजू बिस्तर जल्दी लगा देती है। काली

रात में हाथों हाथ नहीं दिखता। तीनों तो चारपाई पर सोते है पर मंजू एक बड़ी सी चौकी पर सोती है। ये चौकी दिन में आने जाने वालो के लिए काम आती है। चौकी काफी बड़ी है ठीक प्रकार सोये तो तीन व्यक्ति आराम से विश्राम कर सकते है। अंधेरा होते ही चारो अपनी–अपनी जगह पर लेट जाते है। दिन भर की थकावट के कारण तीनों सो जाते है। लेकिन संजू को नींद कैसे आती। दिन भर सोया जो था। उसके दिलों दिमाग पर एक ही नशा था। लगभग रात 11 बजे संजू अपनी मॉ के पास जाकर कहने लगता है– मॅा, मॉ...।

'क्या है? सोने दे।'

'मेरी खटिया टूट गयी, मैं क्या करूॅ।'

'क्या कर रहा था? कैसे टूट गयी।'

'अब, अपने पापा के पास जाके सोजा।'

'नहीं, उनके पास, नीद किसकों आती है।'

मॉ नींद में ऑखें मूदकर ही कहती है–

'जा मंजू की चौकी पर सो जा।'

'ठीक है।'

संजू के दिल की मानों मूराद पूरी हो गयी। संजू चौकी पर जा मंजू की बगल में लेट जाता है। मंजू को अपने करीब पाकर संजू को दोस्तों की वो बात या आने लगी।

संजू के हाथ धीरे–धीरे मंजू के उभारों तक पहुॅच गये। संजू, मंजू की गोलाइयों को सहलाने लगा। संजू के हाथ मंजू के बदन पर दौड़ने लगे। मंजू ने पलटकर ऑखे खोली ही थी कि संजू ने उसे जोर से भींच लिया। अपने भाई को इस रूप में देखकर मंजू की ऑखें फटी की फटी रह गयी। उसके गले की चींख, उसके गले में ही घुट कर रह गयी।

मंजू अपने होंठ खोलती इससे पहले ही संजू ने अपने होंठों को मंजू के लवों पर रख दिया और मंजू पर पूरी तरह सवार हो गया।

संजू को ये भी होश नहीं रहा कि पास ही उसके माता–पिता भी सो रहे हैं। संजू मादक, मस्ती, वासना की आग में अपने रिस्तें को जला बैठा। उसने सोचा की आज तो ये भूख मिटा ही ली। भले ही वो बहिन सही। है तो लड़की लेकिन तन की भूख तो मिटाने पर और बढ़ती है, समाप्त नहीं होती। अब तो संजू एक शिकारी की भॉति मंजू पर ताक लगाये रहता।

मंजू को अपनी आबरू लूटने से ज्यदा ये गम था कि लूटने वाला उसका अपना भाई था। कोई पराया पुरूष होता तो चीख–चीख कर दुनियॉ को बता देती लेकिन क्या समाज मंजू पर विश्वास करेगा? कैसे कहेंगी।

मंजू दिन प्रतिदिन संजू से कतराने लगी। मंजू को संजू के साथ अगर कुछ काम करने को कहा जाता तो आना–कानी करने लगती। ऐसे ही एक दिन मॉ बोली– 'संजू तेरी बुआ की तबियत खराब है। वहॉ से खबर आयी है। हम दोनों कल वहॉ जाएगें। और हो सकता है कि दो एक दिन रूकना भी पड़े, रिस्तेदारी का बात है।

इतना सून मंजू झट से बोल पड़ी–'मॉ तू बुआ के यहॉ जाएगी? मैं भी चलूगी, मुझे भी ले चल।'

'तू क्या करेगी और तेरे बगैर यहॉ कैसे काम चलेगा। भैसें खड़ी रहेगी भूखी।'

'नहीं मॉ, मुझे अकेले रहने में डर लगता है। मॅा मैं भी जाउगी।'

मंजू के जिद्द करने पर मॉ ने गुस्सा करते हुए कहा–'कौन खा रहा है तुझे'

'अपने घर में किस बात का डर। तेरी वजह से तो संजू को छोड़ रही हूॅ। संजू जब तक मैं न आउ अधिक घुमा–घामी मत करना। खेतों और गाय भैसों का काम करते रहना।'

'तू आराम से जा चितां मत करना।'

दूसरे दिन मंजू के माता–पिता दोनों चले गये। मंजू दूर तक कहती रही कि मॉ जल्दी वापस आना।

आखिर मंजू कैसे कहती कि जिसे उसकी मॉ रखवाला बना कर गयी है। भय का कारण तो वही है। वो भी उस भय का कारण जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

अब तो मानो संजू की लाटरी लग गयी। मंजू खाना बनाकर संजू से कहती है–'रोटी परोस कर रख दी है, आकर खा लो।'

'यही लेकर आ दोनों खायेंगें।'

'नहीं मैंने खा लिया। मैं भैसेंा को धूप से छाव में बॉधने जा रही हूॅ।'

भैसों को छाव में बॉधने के उपरान्त चारे वाले कमरे में जाकर भैसों का चारा इक्टठा करने लगी। अचानक लगा कि कमरे में कोई घुसा है। वो झट से चारे की ओट में छूप कर खड़ी हो गयी। मंजू की सॉसे तेज चलने लगी। मंजू ने डर से भयभीत होकर ऑखें बन्द कर ली। कुछ क्षण बाद ऑखें खोली और हिम्मत कर कमरे में देखने लगी वहॉ कोई नहीं था। अपने सिने पर हाथ रख, दिल को थामते हुए राहत की सॉस ली। अब तो मंजू को संजू के औझपें दिखाई पड़ने लगें।

ऐसे तैसे किसी तरह दिन तो काट लिया लेकिन दुश्मन रात तो बाकी थी। शाम को खाना बनाते वक्त सोचने लगी कि अगर पड़ोस में जाकर सो जाय तो ठीक रहेगा। लेकिन मॉ को जब मालूम पड़ेगा तो मॉ बहुत पीटेगी।

इतने में संजू आता है और खाना बनते देख हाथ मुॅह धोकर बैठ जाता है। मंजू चुपचाप थाली आगे कर देती है। खाना खाकर मंजू रसोई का काम निपटाने लगती है। और संजू जानवरों को सुरक्षित स्थान पर बॉध देता है।

मंजू कमरे में कपड़े सुधार कर रस्सी पर डाल रही होती है कि अचानक पंखा चलने लगता हे। शायद स्वीच आन ही था। मंजू ने बल्व का स्वीच ऑन किया और सोचा कि मैं कमरें में दरवाजा बंद करके सो जाऊंगी। भगवान का शुक्र है।

कई दिनों में आज बिजली आई है। यह सोच मंजू ने कमरे में पड़े पलंग पर बिस्तर लगाने लगी। मंजू अभी बिस्तर कर ही रही थी कि दो मजबूत हाथों ने उसे पीछे से जकड़ लिया। वह सकपकाकर रह गयी। क्षण भर में उसे पलटकर जोर से अपनी छाती पर लगा लिया। मंजू ने उसकी ओर देखा तो उसकी ऑखों में अंध ाी हवश के सिवा कुछ न था। आखिर, बकरे की अम्मा कब तक खैंर मनायेगी। संजू के तन पर सिर्फ लुंगी थी। संजू ने साड़ी के पल्ले को मंजू के उभारों से खींच लिया। मंजू ने अपने हाथ से अपने उभारों को ढकने लगी। बुरी तरह घबरा गई मंजू और पीछे की ओर धीरे–धीरे चलने लगी। लेकिन संजू ने लपक कर जकड़ लिया। उसके ब्लाउज के बटनों को खोलता हुआ बोला– 'तू डरती क्यू है? क्यू इतना घबराती है। अरे मैं तो तुझे प्यार करता हुॅ। देख तेरे तन से मेरे मन की आग बुझती है। और ......तुझे भी सुख मिलता होगा ना....। इसमें इतना झनझट क्यों? आ..आ... दूर मत भागा कर।'

'नहीं ...... ये पाप है, महापाप। मैं आपके इस राज को अपने साथ लेकर मर जाउगीं। किसी से कुछ नहीं कहूॅगी। एक ही गुनाह को बार–बार मत करो भईया। मुझ पर तरस खाओं। मुझे छोड़ दो। मुझे छोड़ दों' मंजू रोती बिलकती रही, लेकिन आंसूओं के पानी से संजू की आग नहीं बूझी। क्रोंध ा और उत्तेजना में पागल होकर बोला ये पाप–वाप कुछ नहीं होता। किसी को कभी कुछ पता नहीं चलेगा। मैं तो तेरा भला ही कर रहा हुॅ।'

संजू, इंसान रहा ही नहीं है शायद। जब कोई जानवर बन जाता है तब उसमें सिर्फ शैतानिय होती है। संजू भी एक शैतान की भॉति मंजू के तन पर टूट पड़ा।

अब तो ये सिलसिला रोज चलने लगा। संजू जब चाहता, जैसे चाहता मंजू को ध ार दबोचता। मंजू डर और दहशत में पिली पड़ने लगी। वासना के इस खेल ने उसे जिन्दा लाश बना दिया। कई दिनों बाद उसकी मॉ रिस्तेदारी से वापस आयी। मंजू बूरी तरह मॉ से लिपट कर रोने लगी।

'मंजू रो क्यू रही है। हॉ हमें कुछ दिन रूकना पड़ गया। लड़कियों को मॉ बाप से ज्यादा मोह नहीं रखना चाहिए। वैसे जब कल ससुराल जायेगी ना तब नहीं रायेगी।'

मंजू अपने ऑसू पोछ लेती है। उसकी मॉ कहती है–'चल खाना चढ़ा हमें भूख लगी है। मैं नहा कर आती हूॅ। कई दिन बाद घर का माहौल सामान्य और शांत हो जाता है।

संजू को कुछ काम से बाहर से जाना पड़ता है। तीन–चार रोज बाद जब वह वापस लौटता है तो मंजू के करीब से गुजरते वक्त उसके उभारों को भिंचते हुए निकलता है। मंजू गुस्सें मं चिल्ला पड़ती है–'मॉ देख लो भईया ने ......। इतना कह कर चुप हो जाती है। इतने में उसके पिता जी बोलते है–'क्या हुआ, क्या किया?'

'प....पापा, मुझे बहुत जोर से धक्का मारा।

'अरे..... नालायक थोड़ी बहुत देर तो चैन मार लेता। तेरी शक्ल से ही सिर दर्द होने लगता है। अरें अंधा हो गया है। दिखाई नहीं देता।'

'मॅा मैनें इसे धक्का वक्का नहीं मारा। अरे ... लग गया होगा। वैसे ही मेरे पीछे पड़ी रहती है।'

'पड़ गया ना तुझे चैन... चार बाते सुनवाकर। तू बहिन नहीं है डायन है।' वो तो अच्छा है एक ही है। दो चार नहीं है। ये अकेला भी तेरा ऑख में खटकता है कुतीया। बीना पीहर के कोई घास नहीं डालता।'

मंजू उलटे पांव कमरे में भाग आती है और बिलक–बिलक कर रोने लगती है। मॉ दिन रात बाते सुनाये। और भाई दिन रात रौंदे। आखिर मंजू के जीवन का अर्थ क्या है? अब मंजू को उसकी आत्मा उसे जीने से रोकती है। इतनी कम उम्र मंजू को मौत की चाहत हो जायेगी यह तो उसने सोचा भी न होगा।

मंजू पानी भरने जाती है। अचानक उसे जोर का चक्कर आता है। उसकी ऑखों के सामने अंधेरा छा जाता है। मंजू पानी की बाल्टी लेकर ऑगन में गिर कर बेहोश हो जाती है। मंजू की मॉ पड़ोस के घर बैठी होती है। एक बच्चा उन्हें बुलाकर लाता हैं। पड़ोसन को दाई होने के कारण ये जानते देर नहीं लगती कि उसकी बेहोशी का कारण क्या है। कारण जानते ही मंजू पर उसकी मॉ नागिन की भॉति क्रोध से जहर उगलने लगती है।–'अरे रन्डी, वेश्या, तुझपे जवानी इतनी चढ़ गयी थी तो कलमुही कह देती। क्यू अपनी छाती पर बिठाकर रखते। घर का इज्जत मान, मर्यादा सब खा गयी। डायन, अरे तू पैदा होते ही मर गयी होती।'

मंजू रोती, सिसकती टूटते शब्दों में कहती है–मॉ... मेरा विश्वास करों। मॉ। मेरी इसमें कोई गलती नहीं है। मैं मजबूर थी। बहुत मजबूर।' कहकर वह जोर–जोर से रोने लगती है। मॉ गुस्से से पागल हो उसे पीटने लगती है–'किस हरामजादे का पाप है। बोल.....।'

संजू अपनी जूबा खोलती इसके पहले ही संजू बोल पड़ता है–'मॉ मैंने कई बार इसे अपने दोस्त से घुल–मिलकर बतियाते देखा है। पर मुझे क्या पता था कि ये ऐसा गुल खिला रही हैं।'

मंजू इतना सुन अपना संतुलन खो बैठती है–' नहीं... नहीं..।'

मंजू पसीने से लथपथ हो जाती है। उसका तन काप रहा होता है। वह अपने चारें तरफ देखती है और घबराते हुए अपना पसीना पोछती है। मंजू को बस एक ही डर था कि कहीं उसका सपना सच न हो जाय। कुछ दिनों पहले तो मंजू अपने सपनें के सच होने की दुवायें मॉगती थी। वह मातेश्वरी से प्रार्थना किया करती थी–'हे

मॉ, मुझे एक शरीफ, सुन्दर अच्छे मन वाला सुहाग देना। जो मेरी चाहतों को मेरी नजरों से ही समझ ले। मुझे जुबान खोलनी न पड़े और मेरे दिल की बात उसके होठों पर आ जाये। वह भूल जायेगी कि इस घर में छोटी सी खुशी पाने के लिए उसे कितने ऑसू बहाने पड़ते थे।' इस समय वो एक ऐसी मैना है जिसके पंख नहीं है। उसका पति उसे उसके पंखों के रूप में मिलेगा। तब ये सारा आकाश उसका होगा। जिस दिन उसे उसका साथी मिल जायेगा उस दिन सारे गगन का भ्रमण करेंगी। भिन्न–भिन्न कल्पनाओं से उसका मन पुलकित हो जाता।

तभी झंझर की झन्कार लिये एक लड़की मंजू के कमरे में प्रवेश करती है। जिससे उसकी तनहाई और मौन में विघ्न पड़ता है–'मंजू'

'अरे मीना तू।'

'मैं जा रही हूॅ।'

'लेकिन अभी तो तू रहने वाली थी ना। अब इतनी जल्दी।'

'मैं क्या करू। उन्हें चैन ही कहॉ पड़ता है। मेरे बगैर....। जाना पड़ेगा ही, रात ही आये थे और आज ही चल दिये। मन तो मेरा भी यहॉ रहने को था। पर....।'

'अच्छा ठीक है ये बता अब दुबारा कब आयेगी?'

'राखी पर।'

'शादी के बाद की पहली राखी है। वहॉ थोड़ी ही मनाउगी। यही एक दिन तो बहिनों के लिए अधिक खुशी का होता है। आ अब मुझे विदा कर।'

दोनों सहेलियॉ एकदूसरे के गले मिलती है। फिर मीना चली जाती है। लेकिन रक्षाबन्धन के नाम से उसके दिलों दिमाग में हलचल मच जाती है। क्या संजू राखी के लायक हैं? क्या वो इस बंधन को मानता है? नहीं।

मंजू के मन से एक ही आवाज आती है कि अब तो वो राखी को छूने लायक ही नहीं रही। राखी का पवित्रा धागा उस शैतान के लिये नहीं हो सकता। मंजू का मन चीख, चीखकर कह रहा था। मंजू अब तेरी मांग में सिन्दुर तो सज नहीं सकता। राखी के धागें पर तो वासना ने कफन डाल दिया। आखिर इस मॉटी के तन का बोझ क्यों ढो रही है। यही तन तेरा दुश्मन है, यही तन तेरा दुश्मन है.। मॉ खाना पकाकर उठी और बोली–'मंजू, जा खेत के ट्यूबेल पर रोटी दे आ।'

आज बिना किसी बहाने के मंजू ने कहा–'अभी दे आती हूॅ।'

मंजू रोटी लेकर ट्यूबेल कि कोठरी पर पहुॅचती है। संजू वहॉ बिजली सुधार रहा होता है। छम–छम की आवाज सुनते ही उसके होंठ मुस्करा पड़ते है।

मंजू पहुॅचकर रोटी परोसते हुए बोलती है–'रोटी खा लो, भूख लगी होगी? संजू ने लपकते पैरों से जाकर कोठरी का दरवाजा बंद कर देता है और लपककर मंजू के होठोंपर उगली फिराते हुए बोलता है–' भूख तो लगी है पर ......।'

आज डरने, कपकपाने वाली मंजू की ऑखों में कोई शर्म, हया या खौफ था ही नहीं।

मंजू–'चिता मत कर, आज तो तेरी इस इस भूख को मैं जीभर कर मिटाउगी। जिस रूप में तुम देखना चाहते हो उसी रूप में पेश करूॅगी।'

वह अंडरवियर और ब्रा में संजू के सामने खड़ी हो जाती है।

संजू के कदम मंजू की ओर बढ़ते ही वह बोलती है–'इसस रोशनी को अंधेरे में बदल दे।'

संजू रोशनी के सारे द्वार बंद कर देता है। पलभर में कोठरी में रात हो जाती है। इस बीच मंजू के प्राण उसके तन से अलग होने को आतुर हो रहे थे। मंजू का दम घुट रहा होता है। जीवन का आखिरी पड़ाव शायद आ चुका है। संजू, मंजू को बाहों में भरते ही पसीने से नहा गया। मंजू ने संजू के चेहरे को अपने हाथों में लेकर कहती है–'संजू देर क्यों कर रहे हो। मैं तो तुम्हारी इस भूख को मिटाने ही आयी हूॅ। तुम्हारे इस हवस की भूख ने मेरे जीवन का अंत किया है।' मंजू की सांसे साथ छोड़ रही थी। टूटते शब्दों मंजू ने कहा–'संजू मैं तो जीना चाहती थी पर तूने मरने पर मजबूर किया। तू मेरा सगा भाई होकर मेरे तन को नोचकर खाने वाला जानवर बन गया। संजू मर्द वहीं होता है जो सदैव स्वयं पर संयम रखे। तेरे जैसा इंसान मर्द नही नामर्द है। मैं तो किसी का प्यार पाना चाहती थी, जहर खाना नहीं.....।'

इतना सुनकर संजू मंजू को अपनी बाहों से अलग कर तेजी से दरवाजे की तरफ भागता है और ठोकर खाकर गिर जाता है। एकाएक बिजली का नंगा तार उस पर गिर जाता है एक तेज चीख गुॅज जाती है।

मंजू–'संजू अच्छा हुआ। मैं तेरे कारण मर रही हूॅ और प्रकृति ने तुझे दण्ड दे दिया। ऐसे गुनाह को कुदरत भी माफ नहीं करती। संजू तेरे तन की भूख ने तेरे पेट को भी भूख रखा। देख ले संजू तू इस दुनिया से भूखा ही जा रहा है।'

मंजू का दम टूट जाता है। वह अपनी हसरतों को दिल में लिये इस दुनिया से चली गयीं। और उधर कुछ देर तड़प कर संजू के भी प्राण पखेरू उड़ जाते है। अब रह गयी थी एक बंद कोठरी में दो लाशे। काश, संजय की छोटी–छोटी गलतियों को उसकी मॉ ने पड़ाव न दिया होता। संजय के मन में लड़की सुन्दर और पवित्रा छवि तैयार की होती। अच्छाई बुराई का अंतर खुलकर बताया होता तो आज उसकी गोंद इस कदर न उजड़ी होती। मर्यादा की सीमा सिर्फ लड़कियों के लिये ही नहीं होती। रिस्तों को निभाने के लिए संयम की दीवार खड़ी रहे यह अति आवश्यक हैं

आपकी जुबान

पत्रिका में अब तो जान आ गयी है

संपादक महोदय

पत्रिका का मार्च का अंक पढ़ने को मिला। पढ़कर बहुत खुशी हुई। सबसे बड़ी खुशी की बात है कि पत्रिका की जो अधिक आवश्यकता थी व हम पाठकों की मांग थी पत्रिका के कवर को रंगीन करने की वो पूरी हो गयी है लेकिन एक बात है कुछ रंगीन ज्यादे ही हो गयी है। कृपया इसके नाम के अनुरूप ही कलर का चयन भी करें। पत्रिका के अंदर के मैटर में तो दिन प्रतिदिन, अंक प्रति अंक अतुलनीय निखार आता जा रहा है। इसके लिए संपाद महोदय बधाई के पात्र है।

नम्रता यादव,
मउ आइमा, इलाहाबाद

दिल का पैगाम तो अपने आप में एक दिशा निर्देश है

संपादक महोदय

विश्व स्नेह समाज का मैं नियमित ग्राहक हुं। जब भी पत्रिका देर होती है हमारी निगाहें दुकान की तरफ दौड़ने लगती है। कि अंक आया की नहीं। कृपया इसे एक निर्धारित समय पर निकालने का प्रयास करें। यथासम्भव हमारा सहयोग आपको मिलता रहेगा। गोकुलेश्वर कुमार द्विवदी का धारावाहिक उपन्यास 'दिल का पैगाम' की शुरू की किस्ते तो केवल प्रेम जाल पर आधारित थी। मगर इसमें पिछले दो अंको से समाज में आजकल घटित हो रहे प्रेम के नाम पर छलावे को दर्शाता है। उपन्यास के नायक सावन के दोस्त विशाल की कहानी पढ़कर वास्तव में लगता है

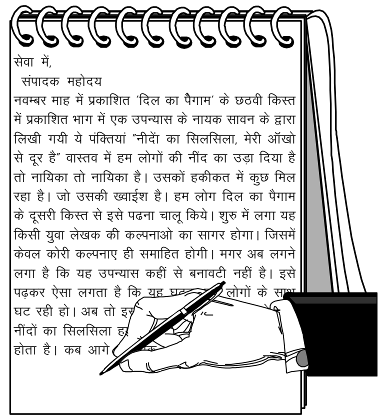

कि लड़किया किस तरह अच्छे, सभ्य लड़कों को बर्बाद करती है। हम लड़कों को इससे सीख लेनी चाहिए कि पढ़ाई के समय किसी भी प्रकार से लड़कियों से टच न रक्खा जाए। अगर टच हो भी तो अपने समान विचार धारा व बराबर के स्टेटस से। अन्यथा विशाल की तरह या तो एक दिन आत्म हत्या का सहारा लेना पड़ेगा या अपने मुंह में कालिख लगानी पड़ेगी।

पत्रिका की कहानियों के स्तर में दिन प्रतिदिन काफी सुधार हुआ है। अब कहॉनिया अच्छी व शिक्षा परक छपने लगी है। जो पत्रिका के भविष्य के लिए काफी अच्छा संकेत है। डाक खर्च थोड़ा मंहगा होने के कारण हम लोग चाहकर भी पत्रिका के बारे में अपने विचार लिखने से चुक जाते है। अगर आपके पास ईमेल की व्यवस्था हो ता कृपया उसका ईमेल ऐडेस डालने का प्रयास करे। हमारी शुभकामनाएं पत्रिका परिवार के साथ है।

सुजीत कुमार सिंह
रानीगंज, प्रतापगढ़

पाठकों से अनुरोध

सभी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि उनकों पत्रिका कैसी लगी। पत्रिका में क्या कमियॉ है, क्या और डाला जाए क्या हटाया जाए आदि के बारें अपने विचार हमें निरन्तर भेजते रहें। आपके विचार ही हमारी सर्वोत्तम पूजीं है। **संपादक**

मॉ विन्ध्यवासिनी की असीम अनुकम्पा आप पर बनी रहे।

सभी पाठकों चैत्र नवरात्र की हार्दिक शुभकामनाएं

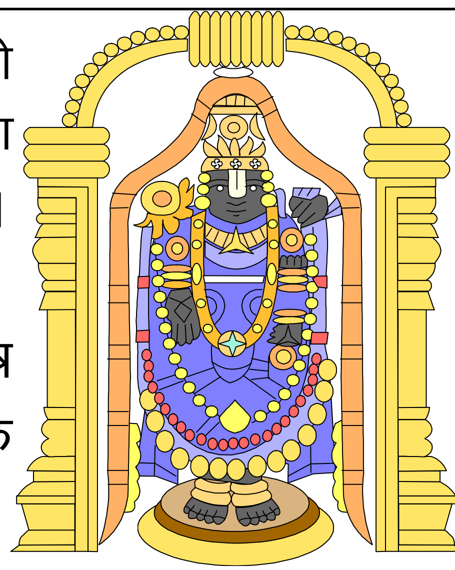

बेबाक

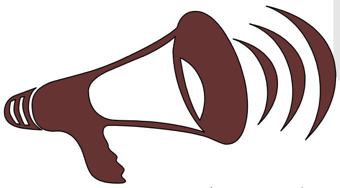

यह मानना गलत है कि ऑस्ट्रेलिया को हराया नहीं जा सकता। ऐसी कोई बात नहीं ऑस्ट्रेलिया को हराना मुमकिन है।

सौरव गांगुली
कप्तान, भारतीय क्रिकेट टीम

गांगुली की टीम ने जिस तरह से केन्या को मात दी है उससे साफ लगता है टीम आस्ट्रेलिया को हराने के मूड में है। रविवार का मुकाबला बेहद रोमांचकारी होगा।

दिलीप वेंगसरकार
पूर्व क्रिकेटर

इराक के साथ युद्ध में अमेरिका को कोई मदद नहीं दी जाएगी।

जार्ज फर्नांडिस
रक्षा मंत्री, भारत

युद्ध के बादल छंटने के बाद मुद्रास्फीति कम होगी **डॉ० बिमल जालान**
गर्वनर, रिजर्व बैंक

सचिन तेंदुलकर विश्व कप के सबसे बेहतरीन खिलाड़ी होगे। **इमरान खान**
पूर्व कप्तान, पाकिस्तान

भारत इराक पर एकतरफा हमलें के खिलाफ है। **अटल बिहारी वाजपेयी**
प्रधानमंत्री, भारत

अयोध्या में विवादित स्थल की खुदाई के नतीजे जो भी आएं, उन्हें सभी पक्षों को स्वीकार करना चाहिए। **जयेन्द्र सरस्वती**
कांची पीठ शंकराचार्य

जब पार्टिया बाल दिवस और किसान दिवस और शिक्षक दिवस मनाती है उस समय किसी को कोई आपत्ति नहीं होती।

सुश्री मायावती
मुख्यमंत्री, उ०प्र०

अंतरराष्ट्रीय आंतकी सरगना ओसामा बिन लादेन पर शिकंजा कसता जा रहा है।

आईएसआई
पाकिस्तानी खुफिय ा एजेंसी

सरकार तब तक पाकिस्तान से बातचीत नहीं करेगी जब तक बदलाव हकीकत में नहीं दिखाई देता। भारत पाकिस्तान का रवैया बदलने का इंतजार कर रहा है।

लालकृष्ण आडवाड़ी
उप प्रधानमंत्री, भारत

वह प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से आशीर्वाद मांगने नहीं, बल्कि उन्हें प्रदेश में पिछले तीन–चार दिन में हुए राजनीतिक घटनाक्रम की औपचारिक रूप से जानकारी देने गई थी। **सुश्री मायावती**
मुख्यमंत्री, उ०प्र०

अटल बिहारी वाजपेयी ने मायावती की पीठ थपथपाकर प्रदेश की करोड़ो लोगों की भावनाओं को आहत किया है, इसके लिए उन्हें माफ नहीं किया जाएगा।

अखिलेश प्रताप सिंह
कांग्रेस प्रवक्ता

लोगों को इलाज और स्वास्थ्य परीक्षण की सुविधा आसान और सस्ती दरों पर उपलब्ध कराई जाए। **एपीजे अब्दुल कॅलाम**
राष्ट्रपति, भारत

जिसके पास पैसा है वह शिक्षा खरीदे। आज पूरे विश्व में शिक्षा खरीदी जा रही है।

महेंद्र सिंह यादव
माध्यमिक शिक्षा मंत्री, उ०प्र

सचिन ने मेरा जो हाल किया वह बुरे ख्वाब की तरह है। पता नहीं क्या गलत हुआ कि मैंने भारत के खिलाफ दस ओवर में ७२ रन दे डाले।

शोएब अख्तर
रावलपिंडी एक्सप्रेस, पाकिस्तान

पाकिस्तान ने वकार यूनुस को कप्तान बनाकर भयंकर भूल की। टीम हाल में आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका से हारी थी। वकार में वो बात थी ही नहीं। उन्हें तो बतौर गेंदबाज भी टीम में रखना गलत होता।

इमरान खान
पाकिस्तान बोर्ड की गलत फैसले के लिए लताड़ते हुए।

हमने विश्व कप में जिस तरह का प्रदर्शन किया उससे मैं काफी निराश हूँ। अब जल्द ही भविष्य के बारे में फैसल लेना होगाः **वकार यूनुस,**
पाक कप्तान

आपको हमारा यह स्तम्भ कैसा लगा, इस पर अपने विचार हमेंअवश्य भेजें। अच्छे विचारों को पुरस्कृत किया जायेगा

कार्टून की डायरीः

अमेरिका : हम इराकी अवाम को शांति पंसद सरकार देना चाहते है तथा इराक का निशस्त्र करना चाहते है।

*निशस्त्र क्यों न करें। तेल का बड़ा भंडार जो है। हथियार तो उत्तरी कोरिया और पाकिस्तान के पास भी हैं और आतंकवाद के पक्के सबूत भी लेकिन वहॉ तेल नहीं है।

दाउ जी

आवश्यकता है

मासिक पत्रिका **विश्व स्नेह समाज** हेतु उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, बिहार, दिल्ली एवं राजस्थान में

0 संवाददाता 0 विज्ञापन प्रतिनिधि

0 विज्ञापन एजेंट 0ब्यूरो 0 एजेंट

हमें टिकट लगें जबाबी लिफाफे के साथ लिखें : एल.आई. जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त दूरभाष–2694856

गुरुकुल विद्या मन्दिर

176 वी, चक रघुनाथ, नैनी, प्रयाग

कक्षा शिशु से दश्म तक

0कुशल शिक्षण व्यवस्था 0 अनुभवी आचार्य 0कम्प्यूटर शिक्षण निःशुल्क

प्रबंधक प्रधानाचार्या

देवशरण पाण्डेय गीता पाण्डेय

हताश क्यों! हताश क्यों!

यदि आप **शादी से पहले या शादी के बाद** किसी भी प्रकार के गुप्त रोग जैसे **नपुंसकता, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, धातुरोग, पेशाब में जलन, कमरदर्द, कमजोरी, टेढ़ापन, खड़ा न होना** आदि रोगों से परेशान है। जगह–जगह इलाज करवाोषज्ञ डा. जी0एन0 दूबे एवं डा0 आर0 के0 तिवारी अगले माह से आपके क्षेत्र देवरिया में बैठेंगे।

गुप्त रोग का ईलाज अब बिल्कुल आसान

दाउजी क्लीनिक

सिविल लाईन्स, गोरखपुर रोड, देवरिया, यू०पी०

डॉ0 जी.एन.दूबे
डॉ0 आर.के.तिवारी

फोन न0 : 311887

कमल बैट्रीज

प्रेमनगर, कुण्डा, प्रतापगढ़

हमारे यहाँ इनवर्टर, बैट्री, चार्जर, इमरजेंसी लाइट, स्टेपलाइजर आदि कुशल कारीगरों के द्वारा बनाकर गारन्टी के साथ उचित मूल्य पर दिये जाते हैं।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

प्रो0 बबलू विश्वकर्मा

☎2461402

फैशन लेडीज टेलर्स

७३५/१, जायसवाल मार्केट, कटरा, इलाहाबाद

हमारे यहाँ सभी प्रकार के लेडिज सूट की सिलाई विशेष कारीगरों द्वारा उचित मूल्य पर की जाती है।

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

एक बार आयेंगे विज्ञापन पढ़कर,
बार-बार आयेंगे सूट पहनकर

प्रो० राकेश गुप्ता

संस्थापित :1987 उ०प्र० सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त ☎ 2636421

श्याम लाल इंटर कॉलेज

चकिया, कसारी-मसारी, इलाहाबाद

कक्षा :केजी से १२ तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

(बालक/बालिकाओं)

प्रधानाचार्या
सुनीता कुशवाहा (एम.ए.बी.एड)

प्रबंधक
अनिल कुशवाहा